3350

ऋषी रोहिणी आख्यान

ऋषि महात्म्य अने पांडवोनुं

हिमाळा गमन.

सर्वे वैष्णवोने माटे

असल संस्कृत उपरथी प्राकृत करनार

गोवरधन सखाराम लखुंदाराम देसाईना.

छपावी प्रसिद्ध करनार

पुस्तकसेलर त्रीलोचन रणछोड डाकोरना.

आवृत्ति पेहली.

अमदावादमध्ये

छगनलाल मगनलाले पोताना शिळाप्रेसमां

छाप्युं. [illegible]

सलापसनमां. सं.१९४४

सने १८८८

किंमत रु.१-०-०

प्रस्तावना.

स्वर्गारोहिणी ए नामनुं पुस्तक महान ऋषी श्री व्यास मुनीनुं संस्कृतमां महाभारतना पर्व भाग १८ तरीके रचेलुं छे, तेनुं गूजरातीमां आगळना कोई कवीए दोहरा चोपाई तथा रागना प्रमाण वगर तथा असल पुस्तकनो पूर्ण भावार्थ मेळव्या वगर रचेलुं हतुं, पण ते कोई जग्याए छपाईने प्रसिध्ध पामेलुं नहोतुं. तेथी आ पुस्तक रचावा मारो विचार थयो, अने गाम डाकोर निवासी व्यास मूळजी खुशाले केटलाएक संस्कृत ग्रंथोनो भावार्थ लई संग्रह करी राखेलुं हतुं, ते तेमणे मने आप्युं. ते उपरथी आ नीति मार्गमां आर्य धर्मनुं पुस्तक में गाम लसुंद्राना रेहेवासी भट गोवरधन सदाराम पासे रचावी शुध्ध कर्युं छे.

आ पुस्तक वैष्णव भक्तोने तेमज कथा केहेनार व्यासजीओने घणुंज उपयोगी थई पडशे एम धारी मोटा अक्षरथी छपाव्युं छे. माटे सुज्ञ जनो पुस्तक खरीदवा उमंगथी प्रयास करशे एवी आशा छे.

आ संबंधी केटलाएक काममां गाम लसुंद्राना वारीगोर भोगीलाल आपुजी, तथा भाई लल्लु मनसुखराम भट्ट एओए मने केटलीएक मदद करीछे तेथी हुं तेमनो आभारी छुं.

संवत् १९४४ माहाशुदी १५ }
मुकाम डाकोर. }

बुकसेलर त्रीलोचन रणछोड डाकोरवाळा.
प्रसिध्धकर्त्ता.

अर्पणपत्रिका.

प्राणथी अधिक प्यारा मीत्र. भाईशंकर पुरुषोत्तम, तथा श्रीकृष्णलाल आत्माराम तथा कपडवणजवारी पंड्या जोशी लाल विश्वनाथ विगेरे मित्र मंडळ.—

तमारो मारा उपर अत्यंत प्रेम छे, तथा मने दरेक काममां सहायता करो छो तो तमारी मारा प्रत्ये प्रेमनी पूर्णतानी यादगीरीमां आ पुस्तक हुं आपने अर्पण करुं छुं.

लखुंदा संवत १९४४ माहाशुदी ११

ली. तमारो मित्र.
गोवरधन सखाराम भट्ट.
लखुंदा, रामक्षेत्र.


पांडवोनी सभा
श्रीकृष्ण
युधिष्ठिर
अर्जुन

स्वर्गारोहिणी.

अध्याय. १

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥अथस्वर्गारोहिणी
आख्यान लिख्यते ॥ ॥रागरामग्री॥ ॥
प्रथम पुजुं श्रीगणपति पायजे ॥ जेथी सकळ
मनोरथ थायजे ॥ वक्रोदर अने ऊजवळ दंतजे
॥ रुडो गवरीनो पुत्र गुणवंतजे ॥१॥ ॥ढाळ
॥ ॥गवरीना पुत्र श्री गणपति, तमो क
रजो मुजपर मेहेर ॥ शंभु सुतने सेवतां, सदा
थाये लीला लेहेर ॥२॥ चतुर्भुजने गज वदन छे,
सिंदुर अंगे साहत ॥ दस लाख कुमार छे संगे,
सुंध बुध नारीनो कंथ ॥३॥ जमणा करमां फरसी
शोभे, अंगे सघळा शणगार ॥ ओष्ट जदनथी
अमृत झरतुं, एवा ब्रह्म कुमार ॥४॥ विधि तन-
या सरस्वति, मुखे वेदवाणी विलास ॥ गोवर
धन कुं दास तारो, वंदु सारदा मात ॥५॥ वैशंपा
ये जेणीपेरे जोव्या, सुण जनमेजय राय ॥ कुं
कथा तुज पिता तणी, स्वर्गारोहिणी महीमाय
॥६॥ कौरव पांडवने युध्ध हवुं, मांहा कुरुक्षेत्र मोझा
र ॥ अढार दिवस संग्राम चाल्यो, योध्ध हणाया
अपार ॥७॥ भीष्मपिता महा द्रोणगुरु वळी, कर्ण

ने अश्वस्थामा ॥ कृपाचार्यने सल्य सरिखा, सु
या शकुनी मामा ॥८॥ जे रीते त्यां अगीयार क्षो
णी, सैन्यनो थयो संहार ॥ पांडवना पण योध्धा
मराया, अपरमपार अपार ॥९॥ जे रीते पी-
त्रीने मारी, राज्य पांडवे लीधुं ॥ युधीष्टरे सिंहा
सन बेशी, कुंज विहारण कीधुं ॥१०॥ पण मनमां
परितापज पाम्या, पीत्री सरवेने मारी ॥ तुच्छ
राज्य माटे कीधुं कुडुं, कुलने नाख्युं संहारी ॥११॥
अेम सोच करे मन मोटो लागी, प्रभु आव्या पा
स ॥ कहे कृष्ण तमे शा कारणथी ॥ धर्म थया उदा-
श ॥१२॥ हाथ जोडी हरी सामे बोल्या ॥ कुंता के-
ना तंन ॥ कुटुंब कणक कीधो में तेथी, अकळाय छे मु
ज मंन ॥१३॥ प्राश्चित जेहुं माथे मोटुं, तेथी दीलडुं
दाझे ॥ सत बंधु में हाथे हणाव्या, तुच्छ राज्यने का-
जे ॥१४॥ द्रोणगुरु अश्वस्थामा आदी, ब्रह्म हत्या-
ओ में लीधी ॥ बार वरस वनमां वरीया पण, अं
ते कुबुध्धि कीधी ॥१५॥ स्वामी शोचना थाय छे म
नमां, सगानो करी संहार ॥ असत्य कीधुं जग-
जेठा में, पडुं नर्क मोझार ॥१६॥ श्री प्रभु कहे तमे
सांभळो भारी, कुंता सुत अेक वात ॥ प्राश्चित स
र्वे थाय लज्जा, यज्ञ करो साक्षात ॥१७॥ पंचरं
गी घोडाने छोडो, भूपर फरवा काज ॥ देश जीती

हुनी आना सर्वे, आवशे ते ह्यराज ॥२८॥ यज्ञ महीं तोखार ने होमी, देव नगिदान आपो ॥श्री पति कहे तेम करवा थकी सौ, नणशे तमारां पा पो ॥२९॥ वायक सांभळी राम णिआनां, छो- ड्यो यज्ञ तोखार ॥ रक्षा कारण मोकल्या साथे पारथ पांडु कुमार ॥२०॥ सर्व देशमां फरीने आ- व्यो, अश्व यज्ञनो लेइ ॥ युधिष्ठिरे अश्वने पोते, कुंडमां होम्यो तेह ॥२१॥ यज्ञ पुरण कीधो छे पांडवे, अश्व मेध लेनुं नाम ॥ हस्तिनापुरनुं राज्य क रे लेने, सहाय छे पुरण काम ॥२२॥ अश्वमेध पुरण करीने, प्रभु थया तैयार ॥ द्वारामतिमां ज वा मारे, कृष्ण निकल्या बहार ॥२३॥ वळावा ग्या विठ्ठलने, कुंताजना तन ॥ आंसु याल्यां आंख्य थकी, भगवान बता लोचन ॥२४॥ अ- र्जुन प्रत्ये बोल्या स्वामि, याल्यो अमारी साथे ॥ तेडी गया पारथने पोते, द्वारामतिमां नाथ ॥ २५॥ ॥वलण॥ ॥हिं नो नाथने अर्जु- न बेउ, द्वारामतिमां जयरे ॥ गोवरधन कहे ते पछी, कथा कही कहुं यायरे ॥२६॥ ॥इति श्री माहाभारते पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे पांडवो अश्वमेध पारथ द्वारका प्रवेशो संक्षेप वर्णो नाम प्रथमो अध्यायः ॥१॥ ॥

अध्याय॥२ जो॥ ॥राग मारु

॥ ॥वैशंपाये कहे धारताय॥ तमो सांभळो
जन्मेजय राया॥ आव्या द्वारामतिमां द्याळ म सा
पे आव्या छे कुंताजाण॥१॥ एम गया दीवस बहु
वही॥ प्रगट्यो वीच्यार प्रभुने तहीं॥ भूमी भारमे
जो छोडीधो॥ मारी असुरने ठ दीधो॥२॥ पण
कोटि छप्पन जादव तेह॥ रह्या अवनीनी ऊपर तेह
॥माटे देवो ते सर्वने मार॥ करवो कृष्णना कुळनो
संहार॥३॥ जे रहे जादव वसुमां तेह॥ पीडे प्रज
ने सघळा तेह॥ माटे कारज कारमुं करवुं॥ कुळ कृष्णनुं
सघळुं संहरवुं॥४॥ पछी जवुं वैकुंठमां मारे॥ जेथी
भूमी भरे नहीं भारे॥ कीधो वीठले विच्यार त्यांय॥
पेठा जादवना जीव मांह्य॥५॥ मति फेरवी हरी-
ए तेनी॥ थई बुध्धि मलीन ते जादवनी॥ शांब
कुंवर जादवनुं नाम॥ कीधुं कपटनुं एक काम॥६॥
वेष वनितानो तेणे लीधो॥ जुठो गर्भने धारण
कीधो॥ मळ्या बेच्यार जादव टोळे॥ बोले मसक-
रीना बहु बोले॥७॥ मन चिंतव्यां कारज करे॥
अनमी अहंकारी थईने फरे॥ एक दिवस ते जन
सर्व॥ गया वनमां आणी मन गर्व॥८॥ रहेता
मुनी ते वननी मोझार॥ नाम दुर्वासा छे निर-
धार॥ करता तपस्या तेस्थानक भारी॥ आव्या

जादवने जुठी नारी॥ ला करी ऊपर मुनी पायेला-
ग्या॥ मुखे आसीर वचन जकु मांग्या॥ रुषी होड
अमो अे दीधी॥ मारे वात जतावजे सीधी॥१०
॥छे आ सुंदरी मारी सारा॥ थासे कुंवरी के कुमार
॥जेडी हाथे कुं जादव जम्युं॥ स्वामी शीघ्र जतावो
सार्युं॥११॥ ध्यान मुनीअे तपस्यामां धार्युं॥ करी
समाधी काम विचार्युं॥ दीधी जादवे मस्करी जेह॥
समजया तपसीते मनमां तेह॥१२॥ क्रोध काम
नी उपर आव्यो॥ रुप जुठुं ते नारीनुं जाव्यो॥
बोल्या रुषीजी करीने रीस॥ कोपी जमर पडाव्यां
छे रीश॥१३॥ पेट पतिने अेवुं अवतरसे॥ ज
दवकुळनो संहार करशे॥ कोटि छप्पन जादव जेह॥
करे क्षय ते क्षणमां तेह॥१४॥ सुणी चमक्या ते ज
दव जेह॥ दीधो रुषीअे शाप रेंु क्रोध॥ सर्व वात
सभामां कही॥ दीधी कन्या ऊपरनी सही॥१५॥ श्री
पतिने आगमती छे वात॥ लोह मुशळ अवतर्युं
साक्षात॥ करी चुरण नाख्युं सागर मांह्य॥ थाय्युं
मूसळ तणा तुं त्यांय॥१६॥ आयुं प्रभास पाटण
मोझार॥ थई पान तेनी नीरधार॥ गया जादव
जत्राने काज॥ छप्पन कोटि सहित महाराज॥१७
॥सर्वे दीधुं मदिरानुं पान॥ भूल्या जपी आ अे
तन नुं भान॥ दीधुं साम सभे मांहो क्रोध॥ लडवा

लाग्यात्यां अहव अंधा॥१२॥कोई पुत्र पिताने
मारे॥कोई पिता पुत्र संहारे॥जेम लडी मुवा अन
सर्वे॥प्राणी मनमां ते अधिको गर्वे॥१३॥पछी श्री
पति अकला रह्या॥वीर अर्जुन पासे गया॥कह्यो
पिछले सर्व वृतांत॥ताई अबु कुं थईने शांत॥वै-
कुंठमां करीशुं अमो॥वीर वचन सांभळजे तमो
॥१४॥केहेजे धर्मने मारा जुहार॥कुंतीने केहेजे न
मस्कार॥प्रभु वैकुंठे जता जाणी॥आव्यां अ-
र्जुनने आंखे पाणी॥१५॥प्रभु तम वियोगे रहे
वाशे॥मारा हरी वीण दीन केम जशे॥आपी
धीरज प्रभुए त्यांय॥मोकल्या समजावी पुरमां
या॥१६॥ ॥चलण॥ ॥मोकल्या हस्ती
ना पुरमां॥अर्जुनने निरधार रे॥पदवार्या पोते
प्राणजीवन॥वैकुंठमां कीरतार रे॥१७॥ ॥
इतिश्री महाभारथे पांडवचरित्रे स्वर्गा रोहि-
णी पर्वे जादवा स्थळी संक्षेप वर्णो नाम द्वितियो
अध्यायः॥२॥ ॥अध्याय॥त्रीजो॥
॥ ॥राग धनाश्री॥ ॥आव्या अ
र्जुन पोते सारजी॥हस्तिनापुरमां नीरधारजी
॥१॥कुंता मातने लाग्या पायजी॥नम्या करीने ध-
र्म रायजी॥२॥मुख करमायुं देख्युं ज्यारे जी॥पू-
छ्युं माताए पुत्रने त्यारे जी॥३॥ताई केम थयो तुं

उाहरी जी ॥ केम करी छे अविनाशी जी ॥४॥ वारी
कारणथी आंखे आंसु भरे जी ॥ केम आक्रंद आ-
वडुं करे जी ॥५॥ त्यारे बोल तुं मारा तन जी ॥ त्यारे
बोल्या त्यां अर्जुन वचन जी ॥६॥ माता वात कं-
हुं छुं सार जी ॥ गया मुकीने जुगदाधार जी ॥७॥
सुणी माता जी ढळी अति घणी जी ॥ जाणे प्राण नथी
पाम्यां मरणी जी ॥८॥ युधिष्ठिर पण महा शोक करे जी
॥ नयणे नीर चोधारां भरे जी ॥९॥ भीम निकुल सह-
देव साथ जी ॥ करे आक्रंद रूपे कुमार जी ॥१०॥ आंसु
लहाने ओत्रा नेह जी ॥ घणुं रुदन करे छे तेह जी ॥११
॥ शोक सागर उलट्यो सही जी ॥ घणुं रुदन करे स-
हु तही जी ॥१२॥ मुर्छा कुंता मातनी वळी जी ॥ दुःख
हृदय कुमनी जी ॥१३॥ बोल्यां माता जी प्रभुनी
साथ जी ॥ तमो साथणो मुक नाथ जी ॥१४॥ केम
मुकी गया हरी तमे जी ॥ कोने आधारे रहीए अमे-
जी ॥१५॥ तमो दिनबंधु छो दयाळ जी ॥ सहु लक्ष त-
णा प्रतिपाळ जी ॥१६॥ नही रहेवाय तम विण ना-
थ जी ॥ माटे उपाडी ल्यो ग्रही हाथ जी ॥१७॥ दुःख
वीयोग केम वेठाशे जी ॥ मारी पण एक जुग सम-
जाशे जी ॥१८॥ एम रुदन आंसु करे जी ॥ कुंता आंखे
आंसुडां भरे जी ॥१९॥ रोतां माताने जोयां ज्यारे जी
॥ सरव रडवा लाग्यां त्यारे जी ॥२०॥ भीम अर्जुन

राहदेध सारजी॥ करे कृष्ण अपरमपारजी॥२१॥
हस्तीना पुरना सहु लोकजी॥ हरी भतां कर्यो अकु
शोकजी॥२२॥ धर्म राये तज्युं आसंनजी॥ भणे
हरखडुं मुज तंनजी॥२३॥ ॥वलण॥
॥ ॥हरख डुं निज तन भणे॥ हवो आत्म
ज्ञानरे॥ गोवरधन कहे ते समे॥ आव्या वैकुंठथी
भगवानरे॥२४॥ ॥इतिश्री माहात्मार
थे पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे पांडव हरी
वियोगकृता उदासी वर्णो नाम तृतियोअध्यायः
॥३॥ ॥अध्यायः चोथो॥ ॥

रागसामेरी॥

॥कृष्ण करता भक्तनेभ
णी, प्रभु पधार्या त्यांय॥ दीन बंधुने भेपाअ
वता, हरख्या ते मन मांय॥१॥ अधिपती ए त्यां
आसन आप्युं, स्वामिनुं सनमान कीधुं॥ अ
र्घपाद्यथी पुज्या पोते, चरण पखाळी पीधुं॥२
॥ उठ्या युधिष्टर आसन छोडी, श्री पतिने प-
धराव्या॥ बजर सांभळी चारे वीरा, हरीनी
शरणे आव्या॥३॥ आनंद पाम्यो अंग मांहि,
कीधुं कृष्णनुं त्यां दर्शन॥ सेवा करतां रामणिय
नी, हरख्या सौना मंन॥४॥ युधिष्टर कहे अज
बेला, करी मेहेर पधार्या आज॥ दर्शन कीधां दि
नपतिनां, सुधर्या सर्वे काज॥ पाहुं अहणायां

हस्नां मारां, आव्या अंतरजामी ॥ तनधनमांमें तमने निरख्या, श्रीरुक्मणीना स्वामि ॥३॥ पण दुःख मोटुं छे मारे, सौथी मणां हेछे ॥ प्रत्न दुःख पामे छे पापे, वचन विलोकीक कहेछे ॥४॥ गंधारीने धतराष्ट्र नर्क, वनमां त्याग्या प्राण ॥ सत बंधु में मार्या मोहन, मूकी मोटां जाण ॥५॥ दुर्योधनने कर्ण मार्यो, मोटा बंधु मारा ॥ दुष्यारीन दुर्बुध दमन, दुरकृत्य आदि संहार्या ॥६॥ दुरकृष्णने दंत दुर्मुख, दंति दवन नेह ॥ दवकने वणी देहोत्र विरा, दवस दोषक तेह ॥७॥ दुर्धषी दांबुक दंतासुर, दुसपंथ दुहदलक्ष ॥ दली दंतकेश दस्तीपत्त, अने दीर्घतम दुरलक्ष ॥८॥ दलासुर दीगमुढ दानेशार, दुरज्ञा कुदकरान ॥ दंत चिर्य दस्क देरीनी, दव दमन दमसान ॥९॥ दवक्रतांत दीसुरने दाभ्रुण, दो दमन दीव अंस ॥ दस्तीचिंह दासाह दवनसेन, दीर्घमोड दजील्नस ॥१०॥ दानेसरने दस्न दंती, दस्तीपत्त दुरकेश ॥ दवदाकुने दवनासर, दव दोह अने दुरवेश ॥ ११॥ जे आदी शत बंधुने में, कुरुक्षेत्रमां मार्या ॥ मामा शकुनी शल्य वणी, गुरु द्रोण समा संहार्या ॥१२॥ भीष्म पितामह कृपाचार्यने, अश्वत्थामा सार ॥ कुणसुं खेदन कीधुं माटे, पडुं नर्क मोझार ॥१३॥ तुच्छ राज्यने माटे मोहन, कीधुं पाप

अपारा॥ विप्रतणी हत्या में कीधी, करीरी देहनो
त्याग ॥६॥ तनथी राज्य भोगववुं भारे, नथी सु
खमां रेहेवुं ॥ त्याग करुं आ तृणवत् दुनीआं,
मर्ण तमारा सेवुं ॥७॥ तव बोल्या श्रीकृष्णप्र
भु, तमो सांभळो मारी वात ॥ मुन कुंदीआमां
वशीयुं अेवुं, कहुं तमने साक्षात ॥८॥ राज्य नहीं
थाये हवे तमथी, कहुं छुं साचुं वीर ॥ आव्यो कलि
युग अवनी ऊपर, सांभळजो रणधीर ॥९॥

॥ ॥वलण॥ ॥सांभळजो रण
धीर वीर ॥ नहीं थाये तमथी राजरे ॥ गोवर्ध
न कहे युधिष्टरने, कहे छे श्री महाराजरे ॥१॥

॥ ॥इतिश्री महाभारथे पांडव चरित्रे
स्वर्गारोहिणी पर्वे पांडवो शोक निवारण श्री कृ
ष्णो हस्तिनापूर प्रवेशो नाम चतुर्थो अध्यायः॥
४॥

॥अध्याय पांचमो॥ ॥

राग मारु॥ ॥कहे वैशंपाय कथाय ॥ सां
भळ जन्मेजय राय ॥ युधिष्टरने श्रीकृष्ण कहे
छे ॥ पांच पांडव त्यां सांभळे छे ॥१॥ पापी कलियु
ग आवशे जेह ॥ धर्म भ्रष्ट करे सहु तेह ॥ सहु प्र
जा थाशे पापी ॥ नाखे वचन तमारुं ऊथापी ॥२॥
कोई धर्म वचन नहीं धारे ॥ धर्ण चारथी थशे अेक जा
रे ॥ त्यारे धर्म बोल्या त्यां वचन ॥ तमो सांभळो

मधु सुदन ॥३॥ कह्यो कलियुग आव्यो कयो ॥ केम
जन्या आचरशे जेवो ॥ केवी पापी प्रजा मारी
थाशे ॥ धर्म राज्य तेरीपेरे करशे ॥४॥ स्वामी क
ळि आचरण जणावो ॥ सर्व घात मने संभळा
वो ॥ वणती बोल्या विश्वंभर वात ॥ महिमा क
ळियुगनो साक्षात ॥५॥ च्यार वर्णनुं कहुं चरि
त्र ॥ सर्वे सांभळो धर्म पवित्र ॥ विप्र कळियुगना
केटला ॥ धर्महीण थाशे तेटला ॥६॥ नहीं अल्या
स वेदनो करे ॥ भलीसि मागवा करता फरे ॥ आशा पार
की राखशे जेह ॥ करे शौद्रनी सेवा तेह ॥७॥ संध्या
स्नान करे नहीं सार ॥ दुष्ट बुध्धि थाशे निरधार ॥ छळ
पाखंड करशे पापी ॥ धर्म शास्त्रने नाखे उथापी ॥८॥
वेद शास्त्रना सरखा गणशे ॥ करी कपट परधन हणशे
॥ कोई वेदने व्यसनी थाशे ॥ कोई शौद्रनुं अन्न खा
शे ॥९॥ अकुलीनीचनो करशे संग ॥ प्रभु नामनो था
शे भंग ॥ कन्या वेचीने धन आकुलशे ॥ विप्र नीचने
दान देशे ॥१०॥ शौद्रने घेर विप्र भणशे ॥ स्वकु
ळने ते शत्रु गणशे ॥ गायत्री विण तरण वापर
शे ॥ कोई पान मदिरानुं करशे ॥११॥ वेद शास्त्रने देशे
गाळ ॥ मात कहेशे पोतानां बाळ ॥ नीच याक
री विप्र करे ॥ परनारीनी पुंठ फरे ॥१२॥ इष्टदेवने
मानशे नहीं ॥ पूजे पीरने दुष्ट जे सही ॥ शौद्रने घ

र भमवा भरी ॥ प्रथम रीझने पीरसीने आरो ॥
१३॥ असत्य अन्या आचरशे सर्व ॥ मन आणशे
अछो गर्व ॥ विप्र थईने कृषी करशे ॥ छानी थापण
ते ओळवशे ॥ १४॥ पेट माटे तपरहेशे भशे ॥ अ
वा कणिना ब्राह्मण थाशे ॥ हवे स्त्रीनां कुछुंकर्म
॥ तमो सांभळो राजधर्म ॥ १५॥ स्त्री थईने पाण-
शे गाय ॥ पुंठळ मलेच्छ मुकावा जाय ॥ हशे स्त्री ब्रा-
ह्मणने मारा ॥ करशे गौ तणो संहारा ॥ १६॥ नही माने
ते देवीके देव ॥ विप्रपासे करावे सेव ॥ सामासामी
लढाई जो करशे ॥ पुन्य पापथी ते नव डरशे ॥ १७॥ देशे कु
पात्रने ते दान ॥ मुके विसारी श्री भगवान ॥ देशे
पतिओने जाकुछुंज ॥ आपे पारकी स्त्रिने सुज ॥
१८॥ सासरवासणीने छुटी लेशे ॥ संत साधुने दु
ख देशे ॥ सुतां पर भणे छानां गामा ॥ लेशे रं-
डीने विप्रना दाम ॥ १९॥ आवे ब्राह्मण उपर राजे
॥ मुजे भुंडां वचन जाकु भांजे ॥ प्रभ पापशे नही
स्त्रीतन ॥ लेवा ताकशे पारकां धन ॥ २०॥ पीरीके
करु महिराके ताडी ॥ मूके पुरथी सुपात्र काढी ॥ शत्रु
सरजाते विप्र भगणशे ॥ करी चोरीने पेट भर
शे ॥ २१॥ युध्ध सांभळी नाशी भशे ॥ जेवा कणि
ना स्त्री थाशे ॥ नही आयुष्य राजशे पास ॥ पेट
माटे थाशे कोना दास ॥ २२॥ ॥ वलण ॥

॥ ॥६॥ दास थारी परतणा॥ पापी नाम प्र-
चंडरे ॥७॥ गोवरधन कहे जिनने॥ हरी जद्धे हडरो॥८
॥ ॥इतिश्री माहात्मारथे पांडवचरित्रे स्व-
र्गा रोहिणी पर्वे श्री कृष्ण रुपि महात्म्य वर्णोनाम
पंचमो अध्यायः॥५॥ ॥अध्याय ६ ठो॥

॥ ॥राग आशावरी॥ ॥वैशंपाये वाणी
बोल्या, सुण जन्मेजय राया॥ जलजे लोक कहे युधि
ष्टरने, रुपि तणो महिमाय॥१॥ ब्राह्मणने स्त्री के
रां मे, संतपाव्यां आप्यर्ण॥ चैरी तणां सालण-
ने, वहाला, वलती शौक्य वर्ण॥२॥ करे नातरां वैश्य-
व सरखे, पापी प्रौढा जन॥ धर्म ध्यान न धारे पोते,
करे अकडां धन॥३॥ चैर राखे विप्रनी साथे, संत-
नेहरी मार॥ थापण ओळवशे दीन जननी, करे छ-
वसंहार॥४॥ दान आपेलां पाछां लेशे, ओछुं तो-
ले तोल॥ दगो करे नीज मातपिताने, न पाणे पीतु
बोल॥५॥ निंदा करशे गुरु तणी, लगनीने मुडका-
डी॥ सासुने घर सोंपे पोते, आपे साळीने साडी॥
६॥ छापां तिलक तूळसीनी माळा, जुठां धारशे
जेह॥ वैर राखे बंधुनी साथे, जुग आव्यरे तेहा॥७
॥ गणि मधुनो वणज करीने, दीनने ते छेतरशे॥ वेशी
ब्रह्मने मुकीने, पाखंडनी पूज करशे॥८॥ ईष्टदेवने
दीवो न करे, पीर मणी दाखवशे॥ वैरी पुत्र व्यसनी

नीवडशे, गुणका संगे लशे ॥८॥ लूंघरनी लक्ष्मि
लूसीने, जन्म नियनुं भरशे ॥ द्वाणां काढे धन
दाबी, नर लुगटे रमशे ॥१०॥ विप्रतणुं धन ह-
रशे पापी, ब्याज वधारे लेशे ॥ लीक्षा नव आपे ब्रा-
ह्मणने, गाळ अतिशे देशे ॥११॥ लगनीने ला-
णेजनी उपर, वधारशे बहु वेर ॥ संत हरीजन वि-
प्रनी साथे, करशे आजुजेर ॥१२॥ हरि कथा पर हेत-
न राखे, लांच लवैया लेशे ॥ पुन्यकामे पैसो नव
खरचे, खोटामां धन खोशे ॥१३॥ अनजेले युधि-
ष्टरने कही, वैशातणी सहु वात ॥ शौन्य तणी कुं-
सांभळजे, युधिष्टर मारा भ्रात ॥१४॥ तुळसी-
नी माळा करधारी, हरीनी निंदा करशे ॥ पापे पग-
लां लरशे पापी, मंस मदिरा लमशे ॥१५॥ करे
आचरण कुडां सरवे, खट दरशनथी दूर ॥ इंद्रि-
वाडा जाणे अहंकारी, पापकरयामां पूरा ॥१६॥
विप्र तणां स्थानक छीनावी, पोते धाम त्यां कर-
शे ॥ दान आपेलां पाछां लेशे, पापे पगलां लर-
शे ॥१७॥ गुरुतणुं अपमान करे, मोटानुं मान
न राखे ॥ शीजवयानारी रजणशे, लाभनी लूडुं
लाखे ॥१८॥ पाखंडीनी पूजन करशे, नमे दुष्टने
पाय ॥ ब्राह्मणने लीखारी करशे ॥ कळिलणो म-
हिमाय ॥१९॥ ॥घलण॥ ॥महीम

जे हणिजुगनो ॥ मोहन कहेता मूळरे ॥ स्त्रष्ट था
शे लूमी सहु ॥ धारी नेतांधू ळरे ॥ २० ॥ ॥
इतिश्री माहात्मारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारो-
हिणी पर्वे श्री कृष्ण कुणि महात्म्य वर्णो नाम
षष्टमो अध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ अध्याय ७
मो ॥ ॥ राग मारु ॥ ॥ वैशंपायन कहे सु
ण राय ॥ स्वर्गारोहिणीनो महिमाय ॥ मोहन
मर्म कुणिनो कहे छे ॥ युधिष्टर सामे त्यां सांलणे छे
॥ वर्णव्यारे तणी सहु वात ॥ कही रीती ये रायनी सा
था ॥ त्यारे बोल्या युधिष्टर वाणी ॥ तमो सांलणो
सारंगपाणी ॥ १ ॥ दुष्ट कुणिजुग हशे दुःख ॥ मारे
नथी लोगवबुं आ सुख ॥ प्रलु त्यरण तमारामां
राखो ॥ नही संलाय दुष्टनो साखो ॥ ३ ॥ त्यारे
श्री प्रलु वदिया वात ॥ सुणो पांडुना पुत्र साक्षा
त ॥ नही रहेवाय तमथी हवे ॥ रह्ल्य पापी कुणि
नुं थवे ॥ ३ ॥ पापी प्रजा थाशे पृथ्विनी ॥ हिंसगर-
वीष्ट थाशे तेनी ॥ ४ ॥ अल्प दूध हशे दुरधाय ॥ र-
सकस सहु लूमीना जाय ॥ लशे कुप सरोवर सु-
काई ॥ मारे जननने पोतानो लाई ॥ ५ ॥ मेघवृष्टि
करे नही वारी ॥ अन्न नीपजे अल्प सुधारी ॥ मा
तपिताने परहरे पुत्र ॥ सोंपे सासुने नीजघर
सुत्र ॥ ६ ॥ नारी नरनुं कह्युं न धारे ॥ रमे अनर न-

गतमां धधारे ॥ देरां मांहे ध्यान न लागे ॥ धणि
तिर्थनो महिमा न लागे ॥ ८ ॥ देरो प्रभुने पतिड
॥ थाशे प्रधान जांचीआलंउ ॥ कुणिना विप्र जेती
करशे ॥ कशी कपर परधन हरशे ॥ ९ ॥ अल्प आयु-
ष्य थाशे सर्व ॥ तोय मनथी न मुके गर्व ॥ आरथ
र्मनी विनता जेह ॥ गर्भ धारे व्यभिचारी तेह ॥ १० ॥
॥ कोई ध्यान धर्म नही धारे ॥ जीव नीच थशे जेउ
आरे ॥ साधु संतनी सेवा न करे ॥ जुग जन स
ह जगमां करे ॥ ११ ॥ जेरी पंडीत पुराणी जे व्या
स ॥ तेनो न धरशे विश्वास ॥ नीच नारीशुं न
करे प्रीत ॥ राजे रामानी साथे रीत ॥ १२ ॥ देशी पति
पीयुने जेर ॥ राजे स्वजन साथे वेर ॥ पडशे दुनी-
यामां आओ दुकाण ॥ मारे माबाप पोतानां जा
ण ॥ १३ ॥ जन हीण थाशे सकुल रूप ॥ ताहे रमवा
रामानुं रूप ॥ पुन्य पापी पाखंडनी करशे ॥ नीच मु-
खथी न्याय सांभळशे ॥ १४ ॥ पिता पुत्रीशुं रमशे
नर ॥ न्यात जातनी ने जेर वेह धारे ॥ निंदा कर-
तां न डरशे कोई ॥ मन मोहीत जुवतीने जोई ॥ प
॥ परनारीनी पुंठण करशे ॥ अति कर्म अधर्मनां कर
शे ॥ रमशे जाळ जुगटुं ने धुत ॥ जमे लाउ लवे
जामां भूत ॥ १५ ॥ धनदाओ देवाणां कदे ॥ जुगां
गरीजनां नामां मांडे ॥ सकुल अष्ट नामनी जोधा

शे॥ नीचनी संगे निगुणि त्तरी॥७॥ ॥

चलण॥ ॥निगुणी त्तरो नीच संगे॥ लाभ
नी मुकी लरथार रे॥गोवरधन कहे सांभळो॥पांडु त
णा कुमार रे॥८॥ ॥इति श्री माहाभारथे
पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे श्रीकृष्णरुक्मिणिम
हात्म्य वरणो नाम सप्तमो अध्यायः॥७॥ ॥

॥अध्याय ८मो॥ ॥राग मारुनी देशी

॥ ॥युधिष्टर कहे रे, अलबेला कुणि आवो
थरो॥ तो तो त्रीकमरे, दीवस कुंभनाकेम नरो॥१
॥दाभ्रुयुं दीलडुं रे, सांभळी वात श्रीरामनी॥पां
भे बीरनें रे, प्रगटी ल्याणा पावक तणी॥२॥ जो-
ल्या धर्म त्यांरे, नाथने शीश नमावियुं॥ सुणी
वातनें रे, आंख्योमां पाणी आवियुं॥३॥ हरकु-
पियो रे, मन परिताप पाम्या घणो॥ कह्युं कृष्ण
नें रे, दाख्यो महिमा कुणि तणो॥४॥ ब्रह्म पुन्य-
थी रे, पाळे छे आज्ञा रायनी॥ स्त्री वेशा जे रे, र-
क्षा करे विप्र गायनी॥५॥ जेथी उलटुं रे, ब्रह्म
पाप केम आदरे॥ नीच कामकां रे, पावक पेरे पराव
रे॥६॥ नथी मानतुं रे, कैयुं माइं कह्युं आपनुं॥ ते-
थी लागयुं रे, पगलुं मुकेलुं पापनुं॥७॥ धर्म छोडीने
रे, विप्र अधर्म आदरे॥ अट कर्मनें रे, तजने करी
कम करे॥८॥ संध्या स्नाननें रे, मूकीने भिक्षा मागरो

॥ तोतो ते ताणुं रे, केम वचन सहु मानशे ॥ लावे
दनिंदतां रे, केम पावक सणगे नहीं ॥ तपशे ॥ तज
रे, केम शेवा करे ते सही ॥१०॥ स्त्री पुत्र जे रे, छिद्र
गौनी वाहुरे चढे ॥ सतकर्मने रे, तजने नर्के नहीं
पडे ॥११॥ वर्णीयुध्धथी रे, नासे पुत्र लूमी तणो ॥
तो तो उलटे रे, उर्ध्वी आत्मा आपणो ॥१२॥ रा
ज्य छोडीने रे, राज्यकुंवर कायर थशे ॥ जावी मार
शे रे, मलेच्छ शेहेरे लागशे ॥१३॥ सत्य वात मां रे
वे षणाय वांकु बोलशे ॥ तो तो न्यायनी रे, वातको
वाको नशे ॥१४॥ करी कपटथी रे ॥ जो छुं तोणी लेछे
तरे ॥ अेथी वैशानी रे, पवीत्र ज्ञती नाकुरे ॥१५॥ वि
प्र स्त्रीनी रे, शेवा करे नहीं शौद्र तो ॥ थाशे मोक्ष पुं
रे, अधर्मी पासे ते नतो ॥१६॥ कही असत्ये रे, कणि
हणाहण व्यापशे ॥ पण लोक जा रे, असती आ
चा केम थशे ॥१७॥ मन माहरुं रे, माने नहीं हेजी ल-
नलखा ॥ तेथी त्रिकम रे, दाखवो तेवा दाखला ॥१८
॥ तो तो सिध्ध जा रे, जोयुं हरी तमनुं थशे ॥ दा
खवो सहु रे, लेईने मन संशय नशे ॥१९॥ पछी
बोलीआ रे, श्रीपति रायनी सावमां ॥ उठो
आसमे रे, काम हजु छे हाथमां ॥२०॥ ॥
वलण ॥ ॥ काम हजु छे हाथमां ॥ कहुं छुं
निरधार रे ॥ गोवरधन कहे दाखवुं ॥ पाडुं तणां कुमार

रोशी॥ ॥८॥इतिश्री महाभारथे पांडवचरित्रे
स्वर्गारोहिणी पर्वे युधिष्टर शोकदर्शावनो नाम
अष्टमो अध्यायः॥८॥ ॥अध्याय९मो॥
॥ ॥राग आशावरी॥ ॥वैशंपा
यन वाणी वद्या तुं, सांभल कुरुराय॥ विस्तारीने क-
हुं छुं तुजने, स्वर्गारोहिणी महिमाय॥१॥श्रीपतिक
हे तम वीर धारने, मोकलो थारे दीश॥तमो रहेजेम
ध्य स्थणे, अजो वनमां सर्व अधीश॥२॥आज्ञा
लेईने कुंता सुत चाल्या, महावननी मोझार॥मध्यस्थ
णे युधीष्टर बेठा, चौदीश चार कुमार॥३॥पूर्व दीशामां
पारथ चाल्या, संभल पूरछे रोहेर॥धर्म विजय पुर
पति तेनो, जज करेछे लेहेर॥४॥आवीने जयुं अ-
र्जुने, वीथीत्र सरणीवात॥जाई उपर अहुं लो-
होमल मुडी, करवी देहनी घात॥५॥शल्य जे रूणी-
अे दीधो, मानी अहुं वचन॥आयु प्रायश्चीत जेईने
मनमां, त्रास्या कुंता तन॥६॥पश्चिम दिशा अे गया
वकोदर, महावननी मोझार॥आव्यो भाग अेक
उत्तम ते स्थण, वसे सीध्ध अेक सार॥७॥फरता फ-
रता गया भिमसेन, बीला रह्याते ठाम॥देख्यो न-
जरे प्रतसरदाभतो, पूरण पापनुं काम॥८॥सिध्ध
तणी अेक सुंदरी तेणे, पुत्री जणी विवेक॥ते पुत्रीने
सीध्धे लीधी, करका दीधा छेक॥९॥वहेंची लीधा पी-

सुपत्निये, पुत्री लागल नेह ॥ पांडु पुत्र पाछो वळियो
त्यां लेई अनिति तेह ॥ ५० ॥ हवे दक्षिण दिशामां
निकुळ गया छे, आव्युं अंतरपुर गाम ॥ लेयुं रीके
र गलीने कुवी, माणस नहीं ते ठाम ॥ ५१ ॥ उजड गा
म जे अंतरपूर छे, ले ता थाल्या त्यांथा ॥ शल मेहेल
मां आव्या निकुळ, मानव लेवा त्यांय ॥ ५२ ॥ तप
दीठो अेक हींहोणापेर, कागहींयतो सार ॥ दोणेवा
सु नांखे हींहोणा, हंसपक्षी नीरधार ॥ ५३ ॥ अेटलुं
लेईने निकुळ त्यांथी, परवर्या पाछे पंथ ॥ उत्तर दि
शामां सहदेव गया, त्यां शुं नीपन्युं संत ॥ ५४ ॥
अघोर वनमां सहदेव आव्या, महा भयानक वन
॥ आगदीसे अेक सरस शीतलितो, त्यां गया कुंता-
तन ॥ ५५ ॥ तरुवर लार अढार दिसे छे, कुणकूलनो
नहींपार ॥ मेवा मीष्ट रह्या छे पाकी ॥ ते वननी मो-
झार ॥ ५६ ॥ विचार कीधो सहदेव आ, कुण उत्तम-
छे नेह ॥ लेई लणी कमळापति माटे, अेप करीने ते
ह ॥ ५७ ॥ अेम कहीने फूण तोड्यां त्यां, गांसडी बां
धी अेक ॥ लईने सहदेव पंथे पडीया, मनमां राखी
टेक ॥ ५८ ॥ गांसडीमां ने फण बांध्यां छे, थया तेह-
ना प्राण ॥ स्वान मंजार मुअेक वनचर घणी, व्या-
घ्र वरुअर लणा ॥ ५९ ॥ लेई चरित्रने सहदेव मन-
मां, विस्मय पाम्या अपार ॥ आ शुं कारण फूणल

ठापिया, अथ अरे कीरतार ॥२०॥ युधिष्टर ने मध्ये
जोडा, करीने जेक ठामा ॥ ते स्थानक दश कुप हता,
त्यां थियुं केवुं काम ॥२१॥ जेक कुपथी जल ऊलराइ,
आठ कुप छलकाय ॥ ते नव कुपनुं पाणी पडे पण, जेक
कुप न भराय ॥२२॥ ते जोयुं युधिष्टरे सहु, पाछ्या
हरिनी पास ॥ प्यारे धीर प्यारे हिराथी, आव्या थई
ऊदास ॥२३॥ सर्व वृत्तांत कह्यो केशवने, कणि तणो
महिमाय ॥ सांभळी कृष्ण कणिनुं कारज, गभराया
त्यां राय ॥२४॥ स्वामि मनमां संदेह भाग्यो हवे
रहेवुं नव भाय ॥ नथी करवुं राज्य पुरनुं ॥ आवीरी वैकुं
ठ मांय ॥२५॥ तमे कह्युं ते साचुं थयुं छे, कणिहणाह
जआव्यो ॥ वीरतणे मुख वात सांभळी, भय घणो
दुखायो ॥२६॥ अर्जुने लेई भुठतणी, जेक परिक्षा
निरधार ॥ भिमसेने लेई आणक, हत्या भोगी नीज
पार ॥२७॥ नीकुळे नीधा ऊंचानी, सेवा देखी जेह ॥
सहेदेव कुपर तणी गत, देखी वनमां तेह ॥२८॥ भें
जेक स्थान बेशी, जोयुं भूमिनुं वृत्तांत ॥ थई भ्रा-
त्री मनमां मुजने, लागी सरवे भ्रांत ॥२९॥ माटे
राज्य नथी करवुं हवे, राज्य हणा हुज पान ॥ आ जु
गमां रहेवाय नहीं, शरणे राखो भगवान ॥३०॥ अ
धुं तमारी सोबतमां कुं, वैकुंठनी मोझार ॥ कणि तणा
समयमां रहेवुं नथी हवे कीरतार ॥३१॥ वात जो त्यम

श्रीकृष्ण सुणो, तमो पांडुना कुमार। हवे अवीछुं
वैकुंठमां कही, कपि ताणो ने सार। कपि अय-
थी राज्य तजीने, ज्यारे इच्छा होय। कहुं छुं तम
ने हिमगीरिपर, जावजो वीरा सोय।।७३।। हीम
गीरी शीखरना ऊपर, छे वैकुंठनुं धाम।। मन वशी क
रीने पधारजो सौ, थशी पूरण काम।।७४।। जेम
कही थया अदृशी रूपे, हरि ते नागी वारा। आव्या
पोते निज मंदीरमां, कुंताना कुमार।।७५।। ।।

वलण।। ।।आव्या वीर मंदिर विषे।। वण
वीजनु गर्द धाररे।। रायन कर्युं नीरांत मे।। धर्मे कर्यो
विचाररे।।७६।। ।।ईतिश्री माहात्ममारथे पांड
वचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे श्रीकृष्ण कपि दृष्टांत
दर्शावनो नाम नवमो अध्यायः।।९।। ।।

अध्यायः।।१०मो।। ।।राग मारु।। ।।

वैशंपायन कहे सुणराय।। तुज पिता ताणो महिमा
य।। प्रातःकाल थयो जेटले।। ऊठ्या वीर जे पांचे
तेटले।।१।। स्नान संध्या भोजन वीधि करी।। बां
ये आंधवजेठा चीत धरी।। पासे बेठा छे कुंता मात
।। पुत्र परिक्षत लेई साक्षात।।२।। प्रेल प्रधान पून
रजन सहु।। ऊत्तम विप्र जम जिया बहु।। सत्ता
भरी बेठा राजन।। आपे युधिष्टर सौने मान।।३।।
धर्म कहे भीमसेन सांभळो।। मुकीयो मनतनो अ

जणो॥ तुं छे पराक्रमी मुज वीर॥ तुज समो नही
जण धीर॥४॥ माटे कहुं छुं वीर आज॥ राजे गो-
विंद सौनी लाज॥ सकळ धर्म तपास्या करी॥ हीम
पंथे जवा मन धरी॥५॥ मारे जवुं छे त्यां निरधार
॥ ज्यां बिराजे छे नंदकुमार॥ धरो राज्य तणो अधि
कार॥ पाळो धर्म सकळ वेदधार॥६॥ प्रजा पाळजो
भावे करी॥ जेसी आसन लजो हरी॥ मुज थी
सत्य वचन लांजजो॥ शांति गुण मनमां राखजो
॥७॥ भजजो श्री गोवरधन देव॥ वृद्ध मातनी कर
जो सेव॥ पुरपति कही छाना रहे॥ वळता वृकोद
र वाणी कहे॥८॥ जे कहेशो ते ओरी करथा॥ आवुं
तम साथे हुं सर्वथा॥ तमने छे कुण जुगनी जीक
॥ मुज हृदयमां धरी ठीक॥९॥ तम साथे नीश्चे पर
वरुं॥ राज्य लोग हुं तो नहिं करुं॥ मानुं नहि तम
वचन प्रमाण॥ रहुं तो श्री गोविंदनी आण॥१०
॥ जेम कही वीर छाना रह्या॥ वळता बोल पारथ
ने कह्या॥ अर्जुन तमे छो परम पवित्र॥ मोहन सा
रथी तमारे मित्र॥११॥ राज्य पुरनुं करो तमो॥
सत्य वचन कहीए जे अमो॥ प्रजा पाळण सत्य
आचरो॥ माता कुंतानी सेवा करो॥१२॥ कहुं ज
मारुं हृदे धारजो॥ प्रजा पुत्रनी पेरे पाळजो॥ वळ-
ता पारथ बोल्या वाण॥ तमो सांभळो बंधु सुजा

णी॥४॥राजा धर्म तणुं नवले रोनाम॥ जमो जावीसुं
वैकुंठधाम॥ जमो प्रतिज्ञा ढीले घणी॥ रहुं तो आज्ञा
श्रीमाता तणी॥४॥ पण तावच्यायुधिष्टर वात॥
तमो सांभलजो सहदेव भ्रात॥ कुरो राज्यनो जंगी
कार॥ उत्तम कुल उत्तम वेहेवार॥५॥ जेशी आ
सन लब्ले अविनाशी॥ सती द्रुपतिराणीने पास
॥ शलरथ अश्व मही नही मण॥ करे रोधा रोवकुंघ
णी॥६॥ दास दासी तणो नथी पार॥ भर्या अंजु
रधन लंडार॥ रीअे देईने छाना रहो॥ वण ताव
च्यन सहदेव कहु॥७॥ मारे राज्य कुला कुल पान॥
ज्यां जेउं त्यां छे परम नीधांन॥ मुजने श्री गोविं
दनी आण॥ विराराज्ये न जेसु प्रमाण॥८॥ त्या
रे वहिया युधिष्टर वाण॥ निकुल सामे तज्लेडीने पा
ण॥ कुरीजे विनति वीरा जमो॥ माताने घणसया
हालाछो तमो॥९॥ तेणे कारण तमो पूरमां रहो॥
राज्यनो भार मस्तके लहो॥ रोधा माताजी नी करो
॥ कृष्णलाम मुजे आशशो॥१०॥ कहे छे निकुल सां
भलजो भ्रात॥ नथ करशो जे मुजसुं वात॥ जे कहो
ते मिथ्या सही॥ समतमारा वहीसुं नहि॥११॥ ॥

वलण॥ ॥ नही रहीजे विर राज्य पर॥ कुं
आवुं तमारी साथरे॥ गोवरधने कहे माहरे॥ भ
ज्या गोकुल नाथरे॥१२॥ ॥ इति श्रीमहा

इतिश्री पांडव चरित्रे स्वर्गारोहीणी पर्वे युधिष्टर
भ्राता संवादो नाम दशमो अध्यायः॥१०॥ ॥

अध्यायः॥११मो॥ ॥राग धन्याश्री

॥ ॥कहे वैशंपायन वचन जी॥ सांभळ पांडु
तणा तुं तन जी॥ जोत्या निकुळ एपेरे न्यारे जी
॥कहे पांचाळीने धर्म त्यारे जी॥ द्रौपद सुता सां-
भळजे वात जी॥ करजे सेवना कुंता मात जी॥ स
सु वृद्ध छे तम एवां जी॥ जग गंगा जमुनांना जेवां
जी॥२॥ सासुने सुखमां नीत्य राखे जी॥ जेठां वे
कुंनुं हण चाखे जी॥ सासुने दुःख देशे ने कहुं जी॥ पडशे
रौ रौ नर्क ते कहुं जी॥३॥ माटे मनमांहे निश्चे करी जी॥
रहो हस्तिनापुरमां सुंदरी जी॥ अभिमन्यु तन परी
क्षत ने कहुं जी॥ पांच वर्षनो जाणक तेह जी॥ श्वा ते ने
राज्य एसारी सार जी॥ नरींद्र हिम पंथे नीरधार जी
॥ तमो पुत्रनी रक्षा करजे जी॥ मुख हरीनुं नाम उच्च
रजे जी॥ पा चणती जोत्यां त्यां द्रुपद जाण जी॥ त
मो सांभळो मुज शरथ जी॥ सुंदरी कहे सुणो भू-
पाळ जी॥ नाथ विना नारी जाणो काळ जी॥४॥ सत-
ति स्त्रीने जेम आचरवुं जी॥ नीज कंथनुं रोषन कर-
वुं जी॥ जेम चंद्र विना जामनी जी॥ कंथ वीना तेवी का-
मनी जी॥५॥ कंथ थकी जे अळगी रहे छे जी॥ तेने मर्म
वचन सहु कहे छे जी॥ जपजाने तीरथ छे कंथ जी॥

॥ ३ ॥ डोल वलण तरवानो पंथ जी ॥ ४ ॥ नारीने तो
नारायण पति जी ॥ नव विमुख रहे होय सति जी ॥
माटे मुकीने सुखने वरी जी ॥ पांच्ये नारी विना ना
थारी जी ॥ ५ ॥ मूकी गयानी करी कथा जी ॥ तो कुं
प्राण तजु सर्व था जी ॥ कुण जुगे स्त्रि थारी पर तन-
णी जी ॥ तेथी जीव लागे मुने घणी जी ॥ ६ ॥ तेह्
रणकुं आयुं तम साथ जी ॥ कुंवरी बोली कुं पांच्ये नाथ जी
॥ हस्तीना पुरमां रहुं आन जी ॥ लागे मात पिता
ने लाज जी ॥ ७ ॥ समगो विंहना छे सही जी ॥ स्वा
मी राज्यमां रेहेवुं नहीं जी ॥ पछी जट नण त्यां
नी रंधार जी ॥ हीम नवाथ्यां तैयार जी ॥ ८ ॥ उत्त
म मौरत लीधुं सार जी ॥ आव्यो परिसत मे अधिकार
जी ॥ तेडाव्या त्यांहां माहा रुषीजन जी ॥ आव्यां मन
गमतां अहु धन जी ॥ ९ ॥ आतिमन्युनो पुत्र छे जेह
जी ॥ नपरायीने लाव्या तेह जी ॥ अंगे जालूषण या
स्यां सार जी ॥ ब्रम्ह आवी छे नेवा अपार जी ॥ १० ॥ त्र
ब्रह्म मंत्र लणे छे घणा जी ॥ पूर प्रधानमां नहीं म
णा जी ॥ बंधाव्या छे मंडप अहु सार जी ॥ मंदिर ते ज
तणो नहीं पार जी ॥ ११ ॥ पाथीय हुं हस्तीना घणा नाद-
जी ॥ सर्व जयजयना करे साद जी ॥ गाय गांध्रव नाचे
नार जी ॥ मंदिर नकरी जोले अपार जी ॥ १२ ॥ छे
पतीयो मंगल गाय जी ॥ आणे परिसतनी वरत

यजी॥ राज्या सुतने जे सार्या पुत्रजी॥ घर्युं परिक्ष-
त तिपर छत्रजी॥६॥ अश्व मातंग गजरथ केमजी
॥ आप्या विप्र प्रसन्न थाय तेमजी॥ परिक्षितने ज्ये
स्नास्या राजजी॥ सोंप्युं प्रधानने सकुटंबजी॥७॥ एम
ते दिवस जेम गयो वहीजी॥ नयानी अयथडीधुं
सहीजी॥ मणिवीर विचारे छे वातजी॥ जसुं सुख
री साथे प्रलातजी॥८॥ प्रातःकाले ऊठ्या सकु
वीरजी॥ माहाधनुरविद्याना धिरजी॥ मणि मा
तने पाये लाग्याजी॥ मुखे आशीर्वचन जकु
माग्यांजी॥९॥ लाग्युं पुत्र वियोगनुं दुःखजी॥ कु
रमायुं त्यां कुंतानुं मुखजी॥ आव्यो वात्सल्य प्रे
म अपारजी॥ चाली आंखथकी चोधारजी॥१०॥
कहे कुंता राजन प्रगटयो छे तनजी॥ नहीं जवा दउं
पुत्रो वनजी॥ आंखे आंसुनी धारा वहे छेजी॥ वि
रपांये ने कुंता कहे छेजी॥११॥ ॥वलण॥
॥ ॥कहे छे कुंता पुत्रने॥ लाग्यो तनमां ताप
रे॥ गोवरधन कहे ते पछी॥ कुरवा मांड्या विलाप रे
॥१२॥ ॥इति श्री माहात्मार्थे पांडवच
रित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे परिक्षीत राज्याभिषेक
वर्णनोनाम छठ्ठो अध्यायः॥६॥ ॥

अध्याय॥७मो॥ ॥राग परज॥

॥ ॥घर सुत सुनु उरी आजरे॥ रणचपति

मुझो रे झाळ रे॥ मध्य सागरे डुब्युं जाणे॥ हो मु
ज जाणारो॥ मुजथी तम विना केम रेवाशे रे॥ मा
रा घोहिला दिन केम जशे रे॥ अंते कोण गति मारी
थाशे॥ हो मुज जाणारे॥३॥ मने सुनो लागे सं-
सार रे॥ केम मुजथी छुट्यो परिवार रे॥ माहारे दर-
बार मारा कुमार॥ हो मुज०॥४॥ तमने जता ज
णी दुध तजसे रे॥ इसी पुत्र हवे क्यां मळशे रे॥
मारां कहेलां वचन कोण करशे॥ हो मुज०॥५॥ मा
री वृद्धपणानी वहार रे॥ सुनो पुत्र विना संसार
रे॥ कोने जई करुं दुःखना पोकार॥ हो मुज०॥६॥
तम विना मुने केम गमशे रे॥ जारे वियोगपद-
ना दमशे रे॥ मारी रांधी रसोई कोण जमशे॥ हो
मुज०॥७॥ मारा सुख दुःखना जाणनारा रे॥ केम
वृद्धपणे थाजो न्यारा रे॥ मारी आंखथी अधि-
क छो प्यारा॥ हो मुज०॥८॥ तम जतां थई आ मुं दु
ख रे॥ नही गोठे आ राज्यनुं सुख रे॥ हवे देखी
श क्यां तम मुख॥ हो मुज०॥९॥ मारा युधिष्टर गु-
ण जाणे रे॥ मने प्यारा लागो समा प्राण रे॥ व-
चि सत्य तणा छो जाण॥ हो मुज०॥१०॥ तम जतां
केम जवाय रे॥ मन आकुळ व्याकुळ थाय रे॥ मारो
जीव तो पण मां न जाय॥ हो मुज०॥११॥ भीमसेन
सरिखो जाण रे॥ जोली जोल रीज वरी कोण ले॥

तम जलतां जरी मारा भाणा ॥ हो मुजना ॥ ११ ॥ हेडंबा
सुर हरि गयो ज्यारे रे ॥ धायो रेरर वीर पुत्र तुं वाह्
रे रे ॥ मारी मुझथी लाज्यो त्यारे ॥ हो मुजना ॥ १२ ॥ कु
लाघेला तुं जोलतो जोलरे ॥ थातो हैडामां हर्षज
तो लरे ॥ लागे मीठा मने तुज जोला ॥ हो मुजना ॥ १३
॥ जपिया अर्जुन सरखा वीर रे ॥ महाधनुरविद्या
नाधिर रे ॥ केम चन जलतां टकौ रे रोरीर ॥ हो मुजना ॥ १४ ॥
रणमां कौरव हणवुं जथडायारे ॥ महाकर्णसमा सं
हार्यारे ॥ द्रोण गुरु सरीखा ने मार्या ॥ हो मुजना ॥ १५ ॥
मारा सहदेव सरखा तन रे ॥ कही नवलो प्युं माहुंय
चन रे ॥ नेने गति पोंहोंच्ये गगना ॥ हो मुजना ॥ १६ ॥
जणता लाजा ग्रहमां सहु त्यारे रे ॥ पुछ्युं सहदेव-
ने तेवारे रे ॥ तुरत देखाड्युं जाणु त्यारे ॥ हो मुजना ॥ १७ ॥
मारा निकुल छेल सोहागी रे ॥ केण नमरी लोजन
लजा मागीरे ॥ केम चन जलरी मुजने त्यागी ॥ हो मु-
जना ॥ १८ ॥ सारा वस्त्र सजी केण करशे रे ॥ केण मायडी
मुजे ऊठी परशे रे ॥ केने लई गणज मांडु करी ॥ हो मु
जना ॥ १९ ॥ मारा ने नथकी प्यारा पुत्र रे ॥ तम विण सु-
नु घर सुत्र रे ॥ केम मुकी जलरी मने पुत्रा ॥ हो मुजना ॥ २०
॥ तम विना जा तन टळवळशे रे ॥ मांहे लु अहुःख
ते केण हणशे रे ॥ मारो सभरीजन सुनो जलरी ॥ हो मु
जना ॥ २१ ॥ त्यासे ऊँलऊ मुने सहु गाम रे ॥ नथ गोरी

घरनुंजमरे॥ धिक पुत्र विनानो ठामा॥ हो मुजा॥२
॥ माहरुं आघ गयाकोण सारे रे॥ करीक्रीयानेकोण
उधारे रे॥ तमजतां नथी कांई मारे॥ हो मुजा॥३
॥ वणि रीा रुमां जेम फेरुंरे॥ पुत्र विना तो नकुं
रहेणुंरे॥ केम मोत नाव्युं तम पेहेलुं॥ हो मुजा॥४
॥ ॥वलण॥ ॥ मोत नाव्युं जम
जतां पेहेलुं॥ नथी रहेतुं स्थिर मनरे॥ आंषे
आंसु चालतां॥ कहे छे गोवरधनरे॥५॥ ॥
इतिश्री माहात्मार्थे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहि
णीपर्वे कुंता विलापवर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः
॥१२॥ ॥अध्याय॥१३मो॥ ॥
॥राग गोडी॥ ॥वणि माता कुंतानें जो-
लियां, हो जाणारे॥ विरानही जया हवे वन, व
डारा जवाणारे॥१॥ कोमळ काया तम तणी, हो
जाणारे॥ मारा जाडकवायातना॥ वडारा जवाणा
रे॥२॥ तमवियोगे मुजथी रहेवाय ना॥ हो जाणा
रे॥ मने मुकीने जशो केम, वडारा जवाणारे॥३॥ पा
येकुं टकुं कुंरपुंचशे, हो जाणारे॥ नहीं चलाय वसमी
वाट॥ वडारा जवाणारे॥४॥ शरीर लपेषा केम वेठशो॥ हो
जाणारे॥ केम ओळंगशो गीरी घाट॥ वडारा जवाणा
रे॥५॥ व्याघ्र सींह वनमां घणा, हो जाणारे॥ कंड
राक्षस होशे अपार, वडारा जवाणारे॥६॥ साथे

आयुष्य नथी राखता,हो जाणारे॥पेस धनमां को
करनार॥वडाराजा॥६॥केम कहि म बेठा रोहईथी हो
जाणारे॥तज्यां वस्त्र आभूषण सार॥वडाराज
ा॥७॥माटे हीम पंथे जरो नही,हो जाणारे॥मारुं
वचन मानी रहो आंहि,वडाराजा॥८॥मारा कीया
जनमना कर्म हरी,हो जाणारे॥ते तो आवीने ज
डीयां आज॥वडाराजा॥९॥आजो जनमारो युद्ध
मांकडी ओ,हो जाणारे॥नव सुजे कंई कहिराजा॥व
डाराजा॥१०॥धात सांभली पुत्र जवा तणी,हो जा
णारे॥बेहेरे करपतकाण जुमांहा॥वडाराजा॥११॥
हव लाग्यो छे मारा अंगमां,हो जाणारे॥हवे ला
ने लईजे क्यांय॥वडाराजा॥१२॥मारो पापी प्राण
जतो नथी,हो जाणारे॥हरी क्रिया जनमना लोग
॥वडाराजा॥१३॥जेम कहीने कुंतां रडे,हो जाणा
रे॥केम सहेवारी पुत्र वियोग॥वडाराजा॥१४॥ए
वां वचन सुणी धर्म बोलीआ हो मातारे॥तमे
थिर कराजो मन॥सुणो सुज्ञ दातारे॥१५॥आ
वे आगण कुणि कपरो हवे हो मातारे॥पारो पापी
पूरना जन॥सुणो॥१६॥माटे राज्य हवे करवुं न
थी हो मातारे॥कहि विघ्न नडे नहीं कांय॥सुणो॥१
७॥अमो हुं औदमी रहुं आपने हो मातारे॥लईरुं
सुगत जवन जेठा ज्यांय॥सुणो॥१८॥मेलु पं-

धारीया वैकुंठमां, हो मातारे ॥ अमो लइ शुं हरिनी पासा ॥ सुणो सुजनारेणा ॥ कहे मजदुं मान गौतेम मां हो मातारे ॥ नय थातां कहि उाघरी ॥ सुणो ॥ २ ॥ प्रधान पाटवी आपणो हो मातारे ॥ धर्म रीते प्रजा वरीराज्य ॥ सुणो ॥ ३ ॥ रक्षण करजे पुत्र परी क्षतनुं हो मातारे ॥ कुल रीते करो सहु काज ॥ सुणो ॥ ३ ॥ आपो आज्ञा अमोने मा वही, हो मातारे ॥ ले ई रहजन बाधि जे सार ॥ सुणो सुजदातारे ॥ ३ ॥

॥ ॥ घलाग ॥ ॥ ॥ रहजन लेई ने बाधिजे ॥ माता द्यो आज्ञा यरे ॥ गोधन धन कहे नेत्र थी ॥ घा रा ध्याली न यरे ॥ २ पा ॥ ॥ इति श्री माहात्मार थे पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे कुंता उद्धारो वर्णो नाम त्रियोदशो अध्यायः ॥ १३ ॥ ॥

अध्याय ॥ १४ ॥ ॥ राग आशावरी ॥

॥ ॥ कलपांत करतां कुंता माता, बोली आं ते ठाम ॥ लाड कुवाया पुत्र विना मने, केम गमे आ धाम ॥ १ ॥ धर्म समा मारा लाल के, देजीरकुया ले मुज ॥ लूंध्या तरस्या धारशो त्यारे, शोने कहेशो दुःख ॥ २ ॥ आयुष्य जेहु नथी तम पासे, मुजे ते जो- लो जोल ॥ केम करी तमो कोमल अंगे, वेठशो दुःख जतो लाल ॥ ३ ॥ युधिष्टर कहे माता मारी, नकरवी चिं ताया पडशो दुःख ते लखेशुं सरवे, शम्यु गोविंदनु पाय

॥४॥ पछी प्रदक्षणा करी पांचे पञ्चा अे पांचे पुत्र
ते ठारा करवाने ऊठीने सनमुख ठीला, त्यां कुंताना कुमा
रा ॥५॥ त्यारे माताअे हृदय साथे, चांप्या पांचे विर,
मोकळे मनथी रुदन करता, मूकी मनथी धीरा ॥६॥ ते
समानी शोकवारता, कवि मुखथी न कहेवाया ॥ पांचे
विरना नेत्रमांथी, धारा चाली जया ॥७॥ निश्चे
जाण्युं माताअे, जे नरी पांचे ब्रात ॥ करुणा करीने
कुंताअे, मुस्तक मुक्यो हाथ ॥८॥ चरणे नमीने
चालिया त्यां, पांचे भूपति साथ ॥ जय नथी गण
ता कोनो, जेने सहाय छे वैकुंठनाथ ॥९॥ अेक जेन
पर आवीया त्यारे युधिष्ठिर कहेवात ॥ सांभळजे
अेक शीख मारी, शरण पांचे ब्रात ॥१०॥ हाथ जोडी
ने अरजुन बोल्या, कहोने करीअे केम ॥ आज्ञा आ
पो जमने विरा, आचरीअे सहु तेम ॥११॥ वचन
सुणीने धर्म बोल्या भाई जवुं हरीनी पास ॥ माटे अ
सत्य अन्या नव करीशो, न थावुं मन उदास ॥१२॥
काम क्रोध लोभ माया ममता, तजवो अति अहं-
कार ॥ कष्ट करे कदी कोई असुर, पण करवो नहीं संहार
॥१३॥ मुनीवृत्त धारवुं आपणे, बोलवुं नहीं कोस
था ॥ वन कुण्ज पहेरी अंगे विरा, जवा वैकुंठनाथ ॥१४
॥ त्यांअे श्री कृष्णा जपता, चाल्या वन मोझार ॥ अ
गण चाले धिर पांचे, पाछळ भूपती नार ॥१५॥ पास

रितानुं जळपान करे, अने वनफळनो करे आहार॥
आल जोडे अवनीपथि रता, कुंतानाकुमार॥१६॥
श्रमकरतां दिन च्यार थया, आव्या वैकाश्रमनी मांय
॥केदारेश्वर शीवते स्थानक, कीधी पूजन त्यांय॥१७॥
गंगाजळमां स्नानकर्युं अने, संतोष्या शिवराय॥
तपस्वी सन्यासी त्यां रहे छे, नमीया सर्वने पाय॥
१८॥ त्यांथी पांडव आगळ चाल्या, सतिश्रूपति सं
ग॥ मुनिवृत्त धार्युं छे सौ जे कष्ट सहे अंग॥
१९॥ आयुध्य अेक नथी ते पासे, हाथमां तुंबीनुं पा
त्र॥ वस्त्र नथी पिनताने अंगे, गोदडी घाडुं गात्र॥
२०॥ धर्म राजदेवने निकुण सर्वे, चाले छे अरणय
पाय॥२१॥ मुख थयां छे सौनां, क्षाणि पडी गई काय
॥२२॥ गंगात्रठ परचाले पोते, पवित्र जळनुं करे पान
॥ मह्यवन लागे जिह्वा माडुं, लूले कायर तननुं भान
॥२३॥ मुखे श्रीहरीनाम लेता, चाले पांचे विर॥ अं
गे झरझर अक थाये, शोणित मूके शरीर॥२४॥ अे
वीरीते अति कुःख वेठी, आव्या न्लेलन विर॥ अ
घोर वन त्यां जावी रह्युं, ज्योले वनवारी सकुदिर॥
२५॥ कौतक अेक थयुं ते स्थानक, त्यां चिर पांचे जाय
॥ अपछरा आवी ईन्द्रलोकथी, वणतुं त्यां रुं थाय
॥२६॥ ॥वलण॥ ॥अपस्छरा आ
वी ईन्द्रलोकथी॥ महा मनोहर रूपे॥ गोवरधनक

हि गान तान करी॥ लोक वखाने रूपरे॥२६॥ ॥ इतिश्री माहात्मारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे पांडव वन प्रवेशो नाम चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥ ॥ अथ अध्याय पंदरमो॥ ॥ राग माढुनी देशी॥ ॥ आवी अपच्छ रारे, अमरापुरीथी सौ मणि॥ माहा वनमांरे, राजकुंवरने रीझववि॥१॥ गान तानथीरे, तान रूपलावा कारणे॥ आवि नारी ओरे, मीठे वाक्य मुखथी लणे॥२॥ कटि मेखलारे, पायमां नेपूर सारियां॥ ओढी चुंदडीरे, कुसुमहार आरोपियां॥३॥ लावा लंबो विधिरे, अवनि जे पग नथी मेलती॥ करी गान मांरे, आंतेथी आ आ खेलती॥४॥ भन मोहनीरे, मोहे पमाडे सर्वने॥ लेई गतिरतिरे, गुणवंती मुके गर्वने॥५॥ रूप मनोहररे, अंबनकीधी आंखडी॥ ललाटे टीकडीरे॥ अधर गुलाल अनीपांखडी॥६॥ युवा वेशमांरे, लाभनी जे रूपचेरी आ॥ आवी घूम लेईने रे कुंतां कुंवर विस्मय पया॥७॥ आवी अंगनेरे, आलींघन हेला मनी॥ नग्नस्वरूपे रे, कया हेजडे कामनी॥८॥ पुत्र पांडुनारे, करे वीमासण मनमां॥ आले शुं परीरे, आकृत आवी वनमां॥ लावि नताकहेरे, मंचि पधारो माहरे॥ वणी लोगवोरे, आशा सहूण परी ताहरे॥१०॥ पछी

विनताअेरे, कुंताकुंवरना कथ्य कह्या॥ मनमानतारे, मे
हनस्वामी मने मल्या॥१४॥ माटे शीघ्र जारे, काम अ-
मारुं सफळ करो॥ नहीं छोडीअेरे, संगे अमारी परवरो
॥१५॥ तव बोलीअ जारे, धर्म धरम मन धारीओ॥ कुं
विघन करोरे, नेट लवाद्यो नारीओ॥१६॥ करी त्याग-
नेरे, राज्यपार रण्य आलीआ॥ पुत्र प्रेम हारे, मूकी हि
माणे मालीआ॥१७॥ शालवंशी मम मांरे, हरी शरणे मन
राख्यीयुं॥ माटे माननीरे, मीथ्यावचन कुम लाख्यीयुं
॥१८॥ पर स्त्रि तणोरे, संग कदी करुं नहीं॥ ब्रह्मचा-
रीनोरे, धर्म सदा पाळशुं सही॥१९॥ माटे करगरीरे,
कहुं छुं तमोने कामनी॥ रहो वेगळांरे, लुष्ट करो नहीं
लामनी॥२०॥ कोटी उपायरे, हाकु नहीं हुं ता कदा॥
ल्ये आवी पडेरे, मुसलके मोटी आपद॥२१॥ बोल्युं
चीतडुंरे, चित्रलूनना चरणथी॥ माटे माननीरे,
नच डरवुं कदि मरणथी॥२२॥ लागणे लगमहीरे, कोटी
कष्ट विचारीयुं ॥ तेणे आसमेरे, विनताने रीस्या
नमावीयुं॥२३॥ नेणे लेरथीरे, कौरव दळ कटका कर्या
॥ तेवा अर्जुनरे, हाथ लेई उतारया॥२४॥ तेना
पग वडेरे, धराधुने धमकारथी॥ जेवा भिमसेनरे,
उला हरिणीनी हारथी॥२५॥ पछी जडजडीरे, ह-
रीपडी, विर पासमां॥ जहरी यिधीरे, अपच्छराग
ण्ठ्राकरीमां॥२६॥ पांचे विर अेरे, विनता चेटक

थी विस्मयथया॥ सतीने सेईरे, कुंताकुंवर आग-
णगया॥२४॥ मुखे श्रीहरिरे, नामजपे बहुविधनुं
॥ वनकुंण सघरे, आयुख्य दीधुं शरीरनुं॥२५॥ ह
री ल्येर नरे, आव्या अधिपती तेटले॥त्रणगिरि
वररे, हिमाचेपांडवे तेटले॥२६॥ अटन्येर नरे, उं
चाई ते गीरीवर तणी॥ त्यार उपररे, तरूवरनी
शोभाघणी॥२७॥ ते गिरि महीरे, वसे राक्षस ऊतु
नामछे॥ गिरीशेखररे, ते दानवनो मुकामछे॥२८
॥ ॥वलण॥ ॥मुकामछे ते दानवतणो
गिरीगुफानी मांयरे॥ गोवरधन कहे सांभळो॥आ
व्यापांडव त्यांयरे॥२९॥ ॥ईतिश्री माहा
भारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणीपर्वे जपयक्षेश्व
पांडवसंवादो नामपंचदशो अध्यायः॥१५॥ ॥
अध्याय॥१६मो॥ ॥राग माऊ॥ ॥
वैशंपायन कहे सुण राय॥ स्वर्गारोहिणीनो महिमा
या॥ रहेतो ऊतु राक्षस तेणे ठाम॥ सहस्त्र राक्षणीना
रीनुं नाम॥१॥ तेह थाये कुंआनी मात॥ ऊतु राक्ष-
स तेनो तात॥ ते वेळा जे रीथई छे पेर॥ हती कुं
आ तातने घेर॥२॥ परणी हेडंज. लिमनी साथ॥
नथी जाणतां मा अने तात॥ पासे जे सारी पुछे छेव
ता॥ कहे पुत्री तुं परण्यानी वात॥३॥ कोनी संगे तें स्वा
पण दीधुं॥ तुज स्वामि जे शुं सुख दीधुं॥ वकतीयही

हिंडआयाणी ॥ मारी सासरी नगमां जणाणी ॥
४ ॥ हस्तिनापुरना पांडुराया ॥ ते तो ससरा हमा-
राथाया ॥ पांच पुत्र छे तेमने पेटा ॥ माहा ईत्तरविर
जिया छे नेटा ॥ ५ ॥ ते मध्ये जेह भीमसेन त्या
ता ॥ तेनो मारु मे ग्रह्यो छे हाथ ॥ तेनाथी थयो पुत्र
ओऊ ॥ नाम घटोरगच्छ विवेक ॥ ६ ॥ घटोरगच्छ
ने छे वली पुत्र ॥ मेघनाद छे तु जोड हित्र ॥ जोई परि
वार हरखी माता ॥ रीहरखा मनमां थई रलियात
॥ ७ ॥ कहे मात हुं सुं छुं जोगा ॥ कुम तेडीन लावीला
गेजा ॥ त्यारे बोली हिंडआ वाता ॥ तुं तो सांभल
मारी माता ॥ ८ ॥ तेना कुलने पिता छे रहा ॥ नद्ध
कुरुक्षेत्रमां तेह ॥ गया कुमड पितानी पास ॥ घटो
रगच्छ अने मेघनाद ॥ ९ ॥ आम पुत्री जने मली
माता ॥ कुरे सरवे सगाईनी वात ॥ ते हरखी नकुपां
डव गया ॥ जोई रासि सु विस्मय थया ॥ १० ॥ गई
हिंडआनी त्यां हरखा ॥ हीडा स्वामी दीयर अने जेष्ट
॥ जोई स्वामीने मन विचारी ॥ ऊठी तुरत हिंडजा
नारी ॥ ११ ॥ जई धर्मने नाम्युं शीश ॥ जेहु स्यांथी
आव्या आशीश ॥ लागी जई भीमसेनने पाया ॥
क्यांथी पधारिया अतिकाया ॥ १२ ॥ अर्जुनरा हद
घने पाये लागी ॥ सतीने नमी आशीश मागी ॥
आयुं आसन बेठां छे सर्वी ॥ नथी कोईना मनमां

गर्वा॥३॥बोलीहेडंबामातनीपास॥कहेवारता
थईनेकुल्लास॥बोलीहेडंबासांभळमाया॥तु
जजन्ममात्रजातिभथाय॥४॥स्नेईमाताजालं
हपामीमन॥कहेहेडंबानेघनघन॥पछीभीमसेन
नेरीरनामी॥कहेहेडंबासांभळोस्वामी॥५॥पा
पुत्रघटोत्कचज्यांगयो॥मेघनादनीपासेरह्यो
॥तेतोकहोनेवर्णवीवात॥तेथीहृदयमांथाउंरळि
आत॥६॥कहेभीमसेनसांभळनारी॥कुंवार
तात्रेविस्तारी॥कीधुंरणमांयुध्यअपार॥घणी
सेन्यानोकीधोसंहार॥७॥कुंपुत्रनुंरुंरूपविरा
महाधनुर्विद्यानाधिरा॥कोटि कटक विडार्युं जेणे॥
मोटामाहारथीमार्यातेणे॥८॥करीयुध्यतेअपर
मपार॥गयोवैकुंठनीमोझार॥गयोमेघनादपण
त्यांय॥पितापोतानाहतात्यांय॥९॥कहेतांप
डीआंसुनीधारा॥धरणीढळीजाकुंतानाकुमार
॥पडीहेडंबाअचेतथई॥लानतननुंभूलीगई॥१०
तेसमेहवोहाहाकार॥चालीसरवनेआंसुनीधार
॥लक्षणेवाग्युंहेडंबानेआण॥छाटयुंताणयुंनेग-
याप्राण॥११॥उठीभीमसेनबेठाथया॥पणप्रा
णहेडंबानागया॥लेवुंदुःखराक्षसनेतेहा॥घणुं
आक्रंदकरेछेहहा॥१२॥राक्षसनासेणीरोवाने
लागी॥हाथेकुटीनेछातीलागी॥कहेछेवीहवेशुं

कस्युं ॥ पुत्री दुहीत्र पाछळ मरयुं ॥ २७ ॥ यह्यापेरव
तणे परनाण ॥ मुक्तीपढतुं ने खोयाप्राण ॥ इतुरा-
क्षसे पण हर्युं जेवुं ॥ निजपति जे कीधुं तेवुं ॥ २८ ॥
पिये मोक्ष ते त्रणेनो त्यांय ॥ ज्याव्यां वैमान जे ठां
ते मांय ॥ गयां वैकुंठनी रेमोझार ॥ इतुरा हस्य कें-
ध्या नार ॥ २५ ॥ ॥ वलण ॥ ॥ केडे जा
ने मातपिता ॥ वैकुंठे ते जयेर ॥ गोवरधन कहे सां
भळो ॥ त्यार पछी रे शुं थायेरे ॥ २९ ॥ ॥ इति
श्री माहात्मारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणीप
र्वे इतुराक्षसादि मृत्युवर्णो नाम शोरषो अध्या
यः ॥ १६ ॥ ॥ अध्याय ॥ १७ ॥ ॥
राग आरशावरी ॥ ॥ वैशंपायेपाणी वद्या
तुं, सुण जन्मेजय राय ॥ जेरी वैमाने दान त्रणे
वैकुंठ मध्ये जयारी ॥ त्यार पछी त्यां शुं थयुं ते, कहुं
छु सर्व वृतांत ॥ प्राश्चित जये पांच पेडीनुं ॥ लागे मन
नी भ्रांत ॥ १ ॥ व्यापाथी तथी श्रीहरी जपता, पांड-
व पांचे वीर ॥ वीशाळे जन पर जाव्या त्यांथी, मनुरवि
ध्याना घिरा ॥ ७ ॥ आव्युं शैहेर जे कु सरस रीते लिखुं,
रमणीक दीसे ठाम ॥ पांडव आव्या मीते शैहेरमां,
नागपुर छे नाम ॥ ४ ॥ त्यार पास पर्वत छे रुडा, घो
र गुफानी मांय ॥ शिंग नामे सरोवर मोटुं, शैहेर
समीपे त्यांय ॥ ५ ॥ स्नान संध्या कीधी सरोवरमां,

वनकृष्ण दीधा अक्रुरा ।।२।। पुर ल्येवाने याव्या त्यां कुं
तानां कुंमारा ।।३।। मगमन्लेयाने माटे, कुंतापां
चराया ।। ते स्थानकमां पांच्ये चिरे, दीठो महाजन त्यां
।।४।। चार वर्णमां धर्म नथी कोई, नयले ह्रीनुं
नाम ।। नाल न्लतमां ल्हान नथी, जेकाग्र सरवेगा
मा ।।५।। कुंता पांडव सतिनी साथे, अन्नर मध्ये जा
व्या ।। हाटचाटनो ठाठ न्लेई, गुण वंता मन हरखाया
।।६।। जेटलामां जेक स्थानक न्लकु लराया हिम
ज्ना ।। ते न्लेयाने कारणे त्यां, गयुं लीमनुं मन ।।
७ ।। पांच लाई ते स्थानक न्लईने, पुछी सघळी
पेरा ।। कहो लाई जा शुं करयुं छे ।। कोनी साथे वेर ।।
८ ।। जेक कहे जमो हीरा स्नेहस्नेनो, हाम पर्मीने पर
ण्या ।। पण कन्या मोकलता नथी, जेथी रोछे अ-
न्या ।।९।। जी न्लेकहे लाई मुन्लजाणकीने, दीधुं
जोणे केरा ।। माटे नही मोकली जे पुत्री, जे कुष्टेने
घेरा ।।१०।। ते सुं न्लेईने पांडव याव्या, राजद्वार मो
झारा ।। धर्म लिम निकुणराहेदेवने, साथे भुपतिना
रा ।।११।। त्यां पण जन्या जति रोहीठो, नहीं त्याय
नवलेरी ।। प्रत्नतणुं पालण नव करता, नहीं स-
त्य उपदेशा ।।१२।। युधिष्टर कहे दुष्ट रोहरमां, नथी
धर्मवो वास ।। माटे चालो स्थानक मुकी, तन्लेअ
धर्मी जवासा ।।१३।। जेम कही पुर त्याग करयुं ने,

आव्यानेअनआराआअघोरवनत्यांओपीर-
ह्युंछे, तअवर ल्ानरअहाराआषाआअपरीरउन त्यां
थायछे अछो, जेठो रुणरुणिउआगाआआगळल
तांपांडुपुत्रने, आवेउीतर्योनागाा२०ााररेउध
र्मनुं घाम जोयन, त्यां आंजेरळ ल्ररायेाावायु
वाये उीलटो अवनीपर, लानु ल्ोमलयथायाा
डाजेपासेजोली लैरवी, जेरीसुरेडाणाा ष्टरता
ताराहीठायरमे, पेडीपेटमांशणाा२गााउीलुरुअ
मणी पालसेजेरी, साहरे लयंररााअंजुर रोज्र
रुरेगुलरुरना, अपरीअन अपारााशाा धर्मरुहेरुं
धारी धिरा, उीचार भारे मनाालागेधरामने श्रुलती
वणी लासे लयानरुवनाा२२ाारोउसागर उील-
ट्यो अति मनमां, विघ्ननउे रांई आव्याा धिमारी
एरुरता वनवारी, रुमररेरुणनी लालााररााशो
रुधरी सरु आगणचाल्या, आव्यो पर्वत जेउाा
विस्तार उीयनो विरीा लेजनछे, महाअन भुरेटर
ाारथाा तेह गिरीनी गुफा महीं जेरु, राक्षसरुररोह
राामेघनाह तेनो अधिपती, राजे मनुष्य साथैवे
रााा२पाा पुरवासी सौ राक्षिस सरवे, हींसाजीवनी
रुरताा ा रामनाम मुखे लयवरताा ा हरीपकीनव
उरताााररााा　　ाावलणाा　　ाानव उरताह
रीनामथीाा श्रसुरमहा विक्राणरेाा गोवर्धनरुहे

जधिपति तेनो अल्लराक्षसनो जाणरे ॥२७॥
॥ ॥इति श्री माहात्म्य ग्रंथे पांडव चरित्रे स्व
र्गारोहिणी पर्वे पांडवो नागपुर प्रवेशो उपदेश
वर्णनो नाम सप्तदशो अध्यायः ॥१७॥ ॥
अध्यायः ॥१८ मो॥ ॥राग धन्याश्री ॥
अल्लराक्षसनो तेणे काळ जी ॥ मेघनाद महाविक्रा
ळ जी ॥ मेघपुर छे रोहिरनुं नाम जी ॥ गीरी उपर ते-
नो मुकाम जी ॥१॥ पांडवे कीधो पुरमां प्रवेश जी ॥ क
टा मुस्तके लोगीनो वेश जी ॥ नहीं तुं रहेवुं आ रोहि
रमो ल्लर जी ॥ माटे निकल्या पांडव जहार जी ॥२॥
जेवे नारद विचार्युं मन जी ॥ त्यां जे हाकता अ
ल्लसहन जी ॥ मेघनाद छे मोटो असुर जी ॥ देई दु
ख सतावे छे सुर जी ॥३॥ माटे घातकु जेनो घणा
धुं जी ॥ मेघनादने पांडव लडावुं जी ॥ त्यारे हिमाण
पांडव त्यारे जी ॥ कह्यो कोण कहो जेने त्यारे जी ॥४
॥ पछी उठीया अंतर लमी जी ॥ आव्या अंतरीक्ष
अंतर लमी जी ॥ मेघनादने माणीजे पेठा जी ॥ ल
ई असुर सत्तामां जे ठा जी ॥ पा ल्लेई असुर त्यां
आनंद पाम्यो जी ॥ देवमुनीने दुख विराम्यो जी
॥ कहे धन्य ल्लाग्य मुज आज जी ॥ कह्यो जमसरापुं
कई काज जी ॥५॥ कहे नारद घणता वाणी जी ॥ आ
व्यो होउ तो दुख अ लणी जी ॥ तुज मामो मघदाल

वळेडूजी॥ मार्यो हतो अर्जुने तेह जी॥ ७॥ लीधा
धनमां जे पारथे प्राणजी॥ साथो रीपु जे तारो
भणजी॥ वैर लेवुं होय भ तारे जी॥ आव्या
अर्जुन जे तुम्हारे जी॥ दाखी भलाई छे.
संगे च्यार जी॥ वळि ध्रुपति सरखी छे नार जी॥
॥ नथी आयुध कोईनी पास जी॥ भय हिमाळे पे
ठने डीदारी जी॥ ता माटे लईने जे पांचेने मा
र जी॥ साथ हरण करीने ते नार जी॥ नारी नक्षत्र
रूपनुं धाम जी॥ मेई ला ले रति मुके माम जी॥ ८
॥ माटे ऊठ भ तेणे ठाम जी॥ कर रीध्रुजीता पणुं अ
म जी॥ एवुं सुणी ऊठ्यो मेघनाद जी॥ कीधो गर्ज
भयंकर साद जी॥ ९॥ भय पांडवने सति केह जी
॥ होड्यो दानव पुंठळ तेह जी॥ आगण चाले छे
पांचे वीर जी॥ मुके भपता श्री रामशरीर जी॥ धीर
॥ पाछळ भय छे ध्रुपद आण जी॥ सुकण पड्यो छे घ
नघ काण जी॥ पांडव आगण चालता भणी जी
॥ भही ध्रुपति ने घेर आणी जी॥ १०॥ भय भणी
आ पांडवे वात जी॥ भय आगण भपता नाथे
जी॥ नथी भेता जे पुंठ वाणी जी॥ भणे आवे छे
ध्रुपद आणी जी॥ ११॥ भय भणुं कपट आवुं थायी
जी॥ कोई काम नाने लेई भरी जी॥ १२॥ भय सति
ने लेईने चाल्यो जी॥ मेघपूरनो मारग झाल्यो जी

॥६॥ करे सति दुःख अपार जी॥ त्याले आंसे
आंसुडांनी धार जी ॥ हवे माणियं पोतानुं त्यां
थ जी॥ ओरु सणमां गयो है त्यत्यां य जी॥ ७॥ ओ
सारी तेमां अपर्पहांण जी॥ मूकुया सिह अ दानव
रक्षपांण जी॥ करे आक्रंद पंचाणी सति जी॥ जे
रे हवे आरी थारी गति जी॥ ८॥ ॥ वलण
॥ ॥ थारी गति थारी गोविंद जी॥ क्यांथी मग
खुं पापरे॥ गोवरधन करे ते सभे, करवा मांड्या वि
लापरे॥ ९॥ ॥ इति श्री माहात्म्यसे पांड
वचरित्रे स्वर्णरोहिणी पर्वे अपति हरणो नाम
अष्टदशो अध्यायः॥ १८॥ ॥ अध्याय १९
मो॥ ॥ रागमल्लार॥ ॥ पंचाणि
पोकारे रे रेहो थारे थाल्ने विठलारे॥ टेक॥ सुभद्
अनाथि त्यागी, रामणिया थाल्ने थाहरे॥ तम
विना त्रिठम जी, आ दानव कोण निवारे॥ ओल
कि आवो आपतो, मरयुं पडरो मारे॥ पंचाणि
पोकारे ॥१॥ इया नीधी इयाण, आवेणा सो ठोधा
रो॥ मोरा राक्ष सने देखी, जइ तपसणे छे मारो
॥ रामणिया सुभनना हाता, विश्वास धर्यो मे
तारो॥ पंचाणि ॥२॥ विपत्ति वेणा विठल, थारे
होजो छे मारी॥ आवो॥ राखी आल अेला, ओठी
दशी तमारी॥ होकली आवेणा न्नणी, संत्माणो

श्रीगीरधारी ॥ पंथ्याणी ॥ ३ ॥ दानवनां मोटां रोजां, आवेछे मुज अवासे ॥ केहेरो लेइधनकु मुजथी तो नथजोजारी ॥ स्वामीते संकट लाणि, मारो जुवडो कटकी लेरो ॥ पंथ्याणि ॥ ४ ॥ हस्तिनापुर नाराज, मुजधर्म सरीजा स्वामि ॥ मुजमाथे मोहन मोटा, गाजेछो अंतरजामी ॥ कीयाकर्मना लोगे, कुवियोग दुःख पामी ॥ पंथ्याणी ॥ ५ ॥ गया हता वनवासे, स्वामी तेडीने साथे ॥ क्षणवारम नेनवहेजोतो, सोधावोजनहाथे ॥ केमतजीगया तरछोडी, मेहेणुंशुं आव्युं माथे ॥ पंथ्याणि ॥ ६ ॥ जाल री सत्नामां लूंधर, संकट लणीने धाया ॥ अस सें नयाणुं पुरीपापीना हाथि दुःखाव्या ॥ मनेकेम आज विसारी, हरजीवन हजु नयआव्या ॥ पंथ्या णि ॥ ७ ॥ दुर्वासा रहस्थ ईव्यासी, तेडीलाव्या जे नन मां ॥ ब्राह्मणने लोजन आपी, ते जन मु जराखी वनमां ॥ केम आ वेळा विसारी, त्रीकम जी रहोत्रेवडमां ॥ पंथ्याणि ॥ ८ ॥ लाजा ग्रह जण ता लणी, गोविंदजी गरुडे आव्या ॥ अग्नीमांथी ऊगारी, जटलणनी हरीजे ठाया ॥ कीयालजम ने पापे, आ वेळा ऊतारी माया ॥ पंथ्याणि ॥ ९ ॥ मुज लिम सरीजा स्वामी, केमकुं विणतमनेग मशी ॥ नयजीवी सोधज मारी, आवियोगदुःख

ડાંદમરી ॥ મુજ માયા કહો કેમ મૂકી રીરીતે રોકજા
સમરી ॥ પંચાળિ ॥ ૧૦ ॥ કીયા કચરે મુજ ઉપર, કુદ-
ષ્ટિ સ્વામિ કીધી ॥ સાંભળતાં સ્વામી તેને, શિક્ષા
તો આપી સીધી ॥ તો આ વેળા અળગેલા, મુને કે
મ વેગળી કીધી ॥ પંચાળી ॥ ૧૧ ॥ અરજુન સર-
ખા ભડભાથી, માણીગર મારા માથે ॥ ભેધા-
રો સ્વામિ મનમાં, જેક આણે અલક હલાવ્યો ॥
તો આ વેળા અળગેલા, કેમ મૂકી મુજને ભજો ॥
પંચાળિ ॥ ૧૨ ॥ સહદેવ સરીખા સ્વામિ, તમો બ
ગ નો મહિમા જાણ્યો ॥ તો કેમ વખત આ આવ-
વ્યો, તે શાથી રહ્યો અજાણ્યો ॥ કહો ટેક મૂકી પાલ-
ણિયા, મનનો મનસુબો માણ્યો ॥ પંચાળિ ॥ ૧૩
॥ અહીં દાનવ દુઃખડાં દેશે, તે મુજથી કેમ સહેવાશે
॥ જે ભૃષ્ટ કરવા ધારે, તે વેળા કોણ ઉગારશે ॥ આ દા
નવ કેરૂ મંદિર જાણું, કઈ દિશાથી આવશે ॥ પંચાળિ
॥ ૧૪ ॥ કોકીલા રાજ્યે આણા, ત્યાં બેશી રૂદન કરતી
॥ સ્વામીને મન સંભારણી, આંખે આંસુડાં ભર
તી ॥ ભૂલી ગઈ ભાન એ તનનું ॥ વિયોગી વૃહ-
થી બળતી ॥ પંચાળિ ॥ ૧૫ ॥ ॥ વલણ
॥ ॥ બળતિ વિયોગે આબિકા ॥ સાંભરે
સ્વામીનો સાથરે ॥ ભભતિ મનમાં ભામની
॥ ગોવરધન નાથરે ॥ ૧૬ ॥ ॥ ઇતિશ્રી

माहाभारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणीपर्वे
पंच्याणि विलाप वर्णोनाम अेकुनविंशोमोअ-
ध्याय:॥१९॥ ॥अध्याय२०मो॥ ॥
रागसामेरी॥ ॥मारा होडीला भरथाररे
केम मूकी मने आं ठाररे ॥ केम सांभरती नथी
नार ॥हार हैया तणारे ॥१॥ मारा होडीला छैल
केम भरीरे ॥ स्वामी तम वीण सुनु भासेरे ॥भ
एे क्यांथी आवीने मारी ॥ दैत्यनुं मारियुंरे ॥
२॥ नथी रहेवानी स्वामीज भानरे ॥ केमविसा
री रसीया साल्हरे ॥ मने रोवाके डीधी ताभारो-
वा रान मारे ॥३॥ मने संभाणशे कोण आवीरे
॥केमकाण नरी नीभावीरे ॥ हवे चाल्यारे मुकथी
रीसावी ॥ महाधन मेलीनेरे ॥४॥ मारुं कव्युं वी
सरुजेररे ॥ वाहालामहीभने साध्यां वेररे ॥ थरी
स्वामिज कांणो केरा ॥ भेरी भेघडीरे ॥५॥ केमच
त मही तमने गमरीरे ॥ ल्यारे नारी तमोने सां
भरशीरे ॥ त्यारे अंतर आपनुं जणशे ॥ केथकोडन
मणारे ॥६॥ भता संग्रामे सेन्यासाथेरे ॥ हरी
आपता मारो हाथरे ॥ हवे अणगी करो केमनाथ
॥ व्याली अेकलारे ॥७॥ कहोके मरह्या छोछानारे
॥ धर्मसमन्यासोभा मुजरशानारे ॥ केमपर्यज्ञ
याछेक हियाना ॥ भणीभने धनेरे ॥८॥ केमवि

सर्यो नारीनुं नाम रे॥ मारा छेल सलुणा रीाम रे॥
केम आणस राख्यो आम॥ घर घरणागीजा रे॥८
॥ ग्युं रूडापणुं तमकेरुं रे॥ तेथी लागे छे दुःख जने
रुं रे॥ नथी गत्नुं आ धनव केरुं॥ आवो जोध मां रे॥
९॥ मारो जन्म अकारथ थारीो रे॥ सुकुमाळी जेही
नकेम नरो रे॥ स्वामि तम धीणकेम छवारी॥ अ
जणा नारथी रे॥१०॥ केम विश्वास आपने आ-
पने आव्यो रे॥ केरुं कुपटथी संग तज्यो रे॥ की
ठगो आ ठगने बोलाव्यो॥ दुरवाकारणे रे॥११
॥ मेंथुं तोडी सरोवर पाण रे॥ केम आव्युं अंते मु
ने आण रे॥ दीधी दोरी को छिल्लने गाणा॥ पाप ते प्र-
गट्युं रे॥१२॥ के मेंशीवनुं देवालय तोड्युं रे॥ वणी
धावतुं बाळ वछोड्युं रे॥ के मेंठीगतुं लघुवर मो-
ड्युं॥ संत संतापीया रे॥१३॥ नमतां विप्रनी पं-
गत भाणी रे॥ नतीगौधेनुं पाछी वाणी रे॥ के में
लीली बागो भाणी॥ पूरण पापथी रे॥१४॥ कोनुं
अंतर ठींठुं जाण्युं रे॥ कोनुं नमतां में ताणुं टाण्युं रे
॥ वणी थातुं सहाव्रत भाज्युं॥ आ दिन आवीया
रे॥१५॥ कीधी आणहत्या थई पापी रे॥ पूरी कुप
सरोवर वापी रे॥ कोनी बीवानी वात ठीथापी॥ कुं
अलागणी रे॥१६॥ केरुं गोत्रगमन में कीधुं रे॥
कोने कुपट करी विषदिधुं रे॥ दीधी दीकरीने धन-

लीधुं ॥ तन तप आवियां रे ॥ २८ ॥ के में ओणखी थाप
ण छानी रे ॥ शुभ वात प्रगट करी केनी रे ॥ के में सं
ताप्या तपसी के रानी ॥ महमनमां लवी रे ॥
२९ ॥ के में सति मतिने संतापी रे ॥ केने जवणी
रीआमण आपी रे ॥ वड पींपण डाणी कापी ॥
तरुवर छेदी ज्यां रे ॥ ३० ॥ के में मीत्रनी खेणी तोडी
रे ॥ पणीनी यशुं प्रीति न्हेडी रे ॥ के रेंशु धावतां धे-
नुं वछोडी ॥ आणा वेरी मां रे ॥ ३१ ॥ के में मांकुण
कुवडुं मास्युं रे ॥ दुष्ट कर्म मां कामधधारयुं रे ॥ के में
पुन्य करतां आण्युं ॥ आहिन आवियां रे ॥ ३२
॥ के कोलि सार्थी पाछो वाण्यो रे ॥ थातो विवाह
रां कनो आण्यो रे ॥ दैवे दोष मारा मां रोला-
ज्यो ॥ दानव हाथे चडी रे ॥ ३३ ॥ मारां ज्यारनां
प्रगल्यां पाप रे ॥ मुने कोनाजाग्या हवे आ-
परे ॥ केम पामुं आया परितापा ॥ कुथ वियोग थी रे
॥ ३४ ॥ मारा लीम समाल डलाथी रे ॥ मारा
सुभ्मकु: अनाछो साथी रे ॥ केम धारया रह्या छो
हाथी ॥ अणीजा आपना रे ॥ ३५ ॥ मुने दान
वे हठमां घाली रे ॥ केम मेलीने नवछोथाली
रे ॥ करता ठकुराई केता वाली ॥ ते केम धिसरयारे
॥ ३६ ॥ पांच पतिनी हुं घुं नारी रे ॥ ते आवे पण
जे थई परनारी रे ॥ आपो मेणुं मोटुं जेमधा

री॥ गदाधर होउन्नेरे॥ २७॥ ॥चूलणा॥
॥ ॥मेंएडुं मोटुं मायक॥ गदाधर आवो
आवरे॥ गोधरधन कहे आवशो॥ तो रेहेशे
सतीनी लाजरे॥ २८॥ ॥इतिश्रीमा-
हाभारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे द्रुप-
तिवीलापवर्णोनाम विशमो अध्याय॥ २०॥
॥ ॥अध्याय एकवीशमो॥ ॥राग
माझ॥ ॥वेरी पाथे कहे सुणराय॥
त्यारपछी तो कहुं महिमाय॥ नथी लणतापे
उपसार॥ हरण करी गयो दानवनार॥ १॥ पां-
चे वीर ते आगण गया॥ लागी तृषा ने ऊभा
रह्या॥ लेवुं भीमसेन ने पाछुं पाणी॥ सति द्रुप
ती ने नवलाणी॥ २॥ कहे भीमसेन नारी ज्यां
गयां॥ लागी घार ऊभां केम रह्यां॥ मारी हाक
न बोले नार॥ कीधो ऊच्चार सरधे अपार॥
३॥ जेवे सांभल्युं भीमसेन॥ जीणा रोष्ट
थी लणे वन॥ कीधो सर्वे मणिने वीचार॥
नीश्चे दानव हरी गयो नार॥ नाथ मो जाज
णो वायुनो तन॥ प्रगटी ल्यापा पावक तणी
मन॥ मोटा अंधुरन आयो आश॥ करी जावुं
कुं रीध्र जे कान॥ ४॥ जेकपण मांकुं पाछो जा
वीश॥ साथे सतीने लेडी लावीश॥ माहा दुष्ट

हणवनेकुमारा॥ लई मुकवुं दुःख थी नारा॥६॥ पेठी
बोल्या युधिष्टिर वात॥ तमो सांभळोने मुज वात
॥कोनी हिंसा न करवी सार॥ आपणे जवुं छे किम
मोझार॥७॥ अहल्याचार समुक्राम करवुं॥ नथी जस:
त्य हवे आदरवुं॥ माटे नथी लेवुं विर मारा॥ आकु
सण घणता हरी तारा॥८॥ अवे गरुड बोल्यो वा
युतना॥ केम वहो छो आवुं वचन॥ तेणे सोणीकरु
हणरु पीधुं॥ केम करयरपाणुं तन व्यापीयुं॥ त्याकरु पापी
ने मारने आबा॥ मेडीवावटे आणुं वाना॥ मारु घन-
वने लई ठारा॥ तो कुकुंता लणोरे कुमारा॥९॥ अमरु
हीचाल्यो दैत्यनी दीशा॥ पडोपी लमर स्पडाव्यां रीशे
री॥ वारे लीमने धर्म तेवारे॥ त्यारे धर्मने लीम
धिक्कारे॥१०॥ न धमान्युं थाल्यो विर त्यारे॥ धर्मे
मोकल्या निकुल ने त्यारे॥ आव्या नगर समीप
नेवारा॥ काल्यो गरुड घांटो तेठारा॥११॥ जे ठांमा
णी जे भूपती त्यांया॥ गया विर जेजंने त्यांय
॥ पीयुं रक्तपाणने लणा॥ लीधां आयुष्य सकु
यां आणा॥१२॥ कहे केम आव्यो जल्या आंही
॥ नथी आज्ञा लवाने मांही॥ तव लीमसेन
बोल्यो वाणा॥ लेवा आव्यो तमारा प्राणा॥१३॥
॥ जो लाजो सीमां जेन्यो जे भणी आ॥ दीधा ऊ
अस्त्र लेईने ऊछळी आ॥ लीमे झाली लीधा ऊ

नायेणी ॥ पृथ्वी पछाडी पमाड्या मर्णं ॥ ६ ॥ पाके
नां शिर अरुणीने कुट्यां ॥ कोई राक्षसनां माथां
कूट्यां ॥ केने उसेटी दीधा आकाश ॥ ७ ॥ लई पडीया
ते लोकन पण्या त्रास ॥ ८ ॥ कोई अयर नाश नया ॥
आलीधर्ण पछाडे पाया ॥ रोहक्क रक्षकने नाख्या
मारी ॥ लीधी माणेथी उीयणी नारी ॥ ९ ॥ सों-
पी नीकुणने नीरधार ॥ बेसा त्यां गीरीपर सती
नार ॥ पछी गया ते नग्र मोझार ॥ सुणी आव्या
त्यां दानव अपार ॥ १० ॥ कर तारा सिस कुलकार
ल्यार ॥ आव्यो सांभली अधिपति त्यार ॥ रीसे
रक्त थयांछे लोचन ॥ बोल्यो रीस नथी मर्भवच
न ॥ १२ ॥ जल्या योरटो छे कुल्ली जारी ॥ नथील
एनो तुं गति मारी ॥ १३ ॥ कारणे आव्यो आहीर
॥ नकी पडथी लुघां कंई शीर ॥ १४ ॥ रणाकंई लक्षण आ
वकुं तांई ॥ तो तो मेघनाद नाम मांई ॥ कहे लीमसे
न बोल विचारी ॥ आव जयषि आवी छे तारी
॥ १५ ॥ ओक पणमां पमाडुं पतन ॥ तो कुं पांडुराज
नो तन ॥ आम कहीने थया तैयार ॥ पेठा दैत्यनी
सेन्य मोझार ॥ १६ ॥ लेनो ईश्वर राजेटक ॥ नथी
आयुध हाथमां ओक ॥ कोने मुष्टिने कोने लात ॥
कोनी धपडथी करी घात ॥ १७ ॥ कोने मार्याछे कुरसे
कडके ॥ कोनां मुख तो ज्यां लपडाके ॥ आलीपायपे

छाडे घणुं ॥ ढोने चीरी पमाडे मर्णुं ॥२४॥ ढोने श्व-
ही ऊछाळे आकाशे ॥ थाय मेघनाद बीहारो ॥ सहु
सैन्य विडार्युं त्यांया ॥ रह्यो मेघनाद रणमांया ॥
२५॥ हणतुं वाहन हस्तीनुं जेने ॥ कुदी भीमे ना-
ख्यो घणुं तेने ॥ मेघनादे ढाली दीधी घेटा ॥ आ-
ली कुंता कुंवरनी कोट ॥२६॥ कीधी चोटने कोट छोडा-
वी ॥ वळग्यो पाछणथी भीम जावी ॥ ऊट आव्य
दानवना घणां ॥ कुरी ऊंच्यो पछाड्यो घणुं ॥२७॥
चीरी नांख्यो त्यां भीमे वळी ॥ गयो प्राण तेनो
नीकळी ॥ कीधो देवे तहां जयकार ॥ वधाव्या पुष्पे कुं-
ता कुमार ॥२८॥ ॥ वलण ॥ ॥
वधाव्या देवे कुंता कुंवरने ॥ जारी शी आपी ज-
पकारे ॥ गोवरधन कहे प्राण दैत्यनो ॥ गयो जम-
पुर मोझार रे ॥२९॥ ॥ इतिश्री महाभा-
रथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणीपर्वे भीमसे-
न मेघनाद युध्धवर्णो नाम अष्टम विश्रामो अध्या-
यः ॥२१॥ ॥ अध्याय ॥२२मो ॥ ॥
राग आशावरी ॥ ॥ कुंतापुत्र त्यां चाल्यो
पुरमां, क्षणुं न जागी वारा ॥ भीमसेन जणिजे
वाटे जतां, कीधो मन विचार ॥१॥ दानवनी दारा-
जो सरवे, रहे छपती जेह ॥ भ्रम पारी राक्षसनी
पाछी, पींडे प्राणी तेह ॥२॥ माटे तेने संहारीने,

करूं परमारथ काम ॥ ऐम कहीने ब्याली बोले, नारी
क्रोधवाळा मा ॥७॥ भूवनमां पेसी भीमनीने, मा
रे मोकम मारा ॥ प्राण लीधा पांडवे कंठना, कंठने
कीधी ठार ॥८॥ एवुं लेई राक्षसनी नारी, भणी
एकी सर्व ॥ युध्य कर्युं भीमसेननी साथे, जाणी
मनमां गर्व ॥९॥ पण तेने परमेश्वर राखे, दानवथी
शुं थाय ॥ मारी स्त्रीसेन्या एक क्षणमां, कीधी छे
अतिकाय ॥१०॥ त्यार पछी द्रुपतिनी पासे, बयाधि
या तैयार ॥ आव्या पुरने हरवाने जेह, थयुं विघ्न
तेणवार ॥११॥ प्यार भूत रहेता ते स्थानक, भीम भी-
डी जो आथीया ॥ जेके हाथ झाली अटकाव्यो, जीतने
जेठो माथीया ॥१२॥ ऐ रीते त्यां प्रेत मळीने, आव्यो
पहुतन ॥ अटकाव्यो अणीजो जे स्थानक, त्यारे
विचार्युं मनमां ॥ ओरे दैव आ शुं थयुं ने, कोणे मुज
ने आव्यो ॥१३॥ शुं विघ्न नडीउं आवा टे, गजे जके णे घा
ल्यो ॥ ऽ ॥ ऊछळी जो अवनी ऊपरथी, कुंतानो
कुमार ॥ भेर करीने हाथे वडे त्यां, पकड्या प्रेत बया
र ॥१४॥ हलावीने अणीओ तेनी, चूरण कीधी काय
॥ प्रेत चार ने साथे लईने, आगळ चाल्यो राय ॥
१५॥ तेवेळा त्यां प्रेत भीमने, करगरता अपार
॥ मुको अमने मेहेर करी तमो धर्म तणा अवतार
॥१६॥ भीमसेन कहे छे कोण तमो छो, कहोने

साथी घाता॥ ने हुं जोल्यो तो पणमां, कहुं तमा-
री घात॥१४॥ प्रेत ओम कहेवा लाग्यो हुं, मेघनाद
नो तात॥ कुडां कर्म अवगति ओ पोहोंच्यो आछे मारा
भ्रात॥१५॥ वात सुणीने यक्षोदरे, मन मां जेम
विचार्युं॥ रहे हवता नकी कुष्ट, माटे तेने मारुं॥
१६॥ पण ते पेहेलां काम करावुं, लागी मुजने भू-
ख॥ अहार मंगावुं मीठा मेवा, जेथी जाये दुःख॥
१७॥ ओम जाणीने प्रेतनी प्रत्ये, कहे छे कुंताकुमा-
र॥ मुकुं तमने जीवता ने, लावी आपो आहार॥
१८॥ प्रेत कहे अेक पणमां वीरा, मनमाने ते लावुं॥
मीष्ट भोजन मेवा इत्यादि, जरी आंसनुं आवुं॥
१९॥ भीम कहे अेक पलक महीं ने, नहीं आवो नी
रधार॥ तो जोणी हनीआ मांथी हुं, मारी नाखी
श ठार॥२०॥ छुटा कीधा प्रेत च्यारने, थया खुशी
अपार॥ वीधवीधना वैलोग सहीत ते, ला-
व्या अमृत अहार॥२१॥ भीमसेनने भूत पास
ते आव्या निकुण पास॥ सति भ्रुपतिने मळी आ
नंद, सरव थया हुल्लास॥२२॥ ते स्थानकथी था
ल्या सरवे निकुणने अतिकाय॥ सति ध्रुपति सा
थे आव्यां, ज्यां बेठा हता राय॥२३॥ युधिष्ठिर
ने पाय नमी नई, निर्मळ कूडी नारा गहदगछंके
अर्जुनने त्यां कीधा नमस्कार॥२४॥ भेरीने भु

गतिथी नठीने, भीते आलींघन दीधुं॥ भेयाभीष्ट
लाव्या हता साथे, सर्वे मळीने आयुं॥२५॥ प्रेत
के स्वामी जो अमने, रत्न हेतथी आपो॥ तम री
रणे मुस्तक छे माहरूं, हुं अडां सरवे कापो॥२६॥ अ
तणी पण ऊठ्यो ओ घेणा, आल्यो नठीने प्रेत॥ पा
य आलीने धरण पछाड्या, कीधां काय अचेत॥२७॥
वीरीनां पिंया चरण ग्रहीने, प्रेत वीरने चारा॥ जा-
णुं ठरतुं कन्ने ईश्मीमनुं, आरीया धर्म अपार॥२८॥ अ
रलाई प्राश्चितकेम कीधुं, नवुं हरीने रारण॥ हीम
पंथ नतां आवघने, केम पमाड्या मरण॥२९॥ आली
मकुंठ सांत्तनणन्ने त्राता, असुर आघा पेहेरी॥ तो
हरी नननेते सक्कननने, कुळ अतिशे हेरी॥३०
॥ ते माटे मोरा बंधु में, प्रेत च्यार आमार्या॥ मेघपु
र जीतन कीधुं ने, असुर सौ संहार्या॥३१॥ ॥
वलण॥ ॥ संहार्या असुर भेंसामटा, मे
घपुरीना सर्वे॥ गोवरधन के तेहनो, मुकाव्यो
आछो गर्व रे॥३२॥ ॥ ईति श्री माहाभारथे
पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे भीमसेन प्रेत
संहारनाम द्विविंशो अध्यायः॥२२॥ ॥

अध्याय॥२३ मो॥ ॥राग धन्याश्री
॥ ॥ जोह्या त्यां थकी पांचे चिरन्जी॥ पेहेयीं
धनकुंज नरचे शरीरक॥ नीचीहीम परपतनी

वाटजी ॥ एवे ऊतरे गीरीना घाटजी ॥१॥ मोटुं व
न भयानक तेहजी ॥ लागे भितीने कडके देहजी ॥
त्यांथी आव्याछे भेनन वीसजी ॥ दीठुं नगर ते
ऊत्तर दीशजी ॥२॥ कोट कांगरा नीरना घाटजी
॥ शोभावाळा हवेलीना ठाठजी ॥ कहे धर्म थाओ
आगारजी ॥ लागी सुधा सरखने अपारजी ॥३॥
जेम कहीने गया पुर मांहजी ॥ दीठा वणिक वेपा
री त्यांयजी ॥ ब्राह्मण क्षत्रीने शुद्र अपारजी ॥ केन
ने धर्म नथी लगारजी ॥४॥ आ नगरमां छे कणि-
नो ठामजी ॥ माटे कणिपुर शेहेरनुं नामजी ॥ सरवे
असत्य अन्या करताजी ॥ कन्या वेचीने धन सं-
घरताजी ॥५॥ कोई थापण छानी ओळवताजी ॥
संत साधुने शिक्षा देताजी ॥ राजे विप्र संगाथे
वेरजी ॥ देता माबापने पुत्र झेरजी ॥ ज्ञानी कथी
नताने वेची देताजी ॥ नीच जातनी कन्या लेताजी
॥ ब्राह्मण थईने करे कुकर्मजी ॥ राजकाजमां पात
तीपक्षजी ॥६॥ रहेवा परदेशीने नहीं ठामजी ॥
एवुं अधर्मि आपेणुं गामजी ॥ कोई कामनी धर्मी
न धारेजी ॥ कोई माता आणकुने मारेजी ॥७॥ सा
सरो रमे वधु रीसे लरजी ॥ गणे नहीं स्वामीने भ
रतारजी ॥ जेवो वर्ण त्यारेनो धर्मजी ॥ नव जाणे को
ईनो मर्मजी ॥८॥ जेवा नग्रमां पांडव आव्याजी ॥

लोई पुरने विस्मय थयाजी ॥ सुधा लागी हतीजे
पारजी ॥ त्यां रहेवा कर्यो सर्वे वीच्यारजी ॥ १० ॥ के
विप्रने मंदिर गयाजी ॥ कलावाला करी उतारया
जी ॥ कहे धर्म तमो महाराजजी ॥ तम सरखुं जमारे
छे काजजी ॥ ११ ॥ करी रसोई जमवुं जमारेजी ॥ माटे
लोचन आव्या तमारेजी ॥ रज आपो तो रहीजे
आजजी ॥ लागी गरीजने करो काजजी ॥ १२ ॥ सुणी
विप्रते वदतो आव्योजी ॥ मोटी नेष्टीक आलीला-
व्योजी ॥ तमो जते धुतारा के चोरजी ॥ केम आवीक-
रो जही सोरजी ॥ १३ ॥ जो अहींथी तमाकं न
कावेजी ॥ लाजो तम सरखा ठग आवेजी ॥ पडे पग
छुं लेगी लेत माकंजी ॥ अन्य अन्न पाणी सहु माकं
जी ॥ १४ ॥ माटे लज्यो तमारे दिराजी ॥ नहीं तो कोडी
नाजीरीत मरीशजी ॥ सुणी पाछा वल्या पांडुत
नजी ॥ चाल्या पूछवा अन्य लोचनजी ॥ १५ ॥ पापेण
अन्य स्थपे नहीं कव्याजी ॥ कष्ट वाक्य सुणी पाछा
आव्याजी ॥ लुचे पांडव लेनजे कहजी ॥ जोले मर्म
वचन सहु तेहजी ॥ १६ ॥ कोई कहे साधु स्त्रि सारी ला
व्याजी ॥ वेष्य पाने आरी केरमां आव्याजी ॥ कोई पु
छे मूल नारी तणुंजी ॥ जेम जन मन्युं टोपे घणुंजी
॥ १७ ॥ कोई कहे नारी चोरीने लाव्याजी ॥ छुपा रहे
वाने रोहेरमां आव्याजी ॥ कोई कहे जे चोर छे ला

रीजी॥ जेम थाउय चोर्‍हुं अंगारीजी॥ ५१॥ कोई कहे
अे धुतारा आव्याजी॥ आ नारीनुं हरण करीला-
व्याजी॥ मारे थासो शाल्ननी पासजी॥ करी अे आ
सर्वयात प्रकारीजी॥ ५२॥ अेम कही छेड्यां अे पल
नजी॥ गया अधिपती ने लोचनजी॥ कोरकणी
छे नाम लूपाणजी॥ कीधो पूरजन्ने कई पोकारजी॥
५३॥ स्वामि कोई धूतारा आव्याजी॥ अेक कामनी
साथे लाव्याजी॥ पांचे पुरुषने अेक नारजी॥ मोटी
थोरी तणा करनारजी॥ ५४॥ कहो कुमत्ते थीरनीजे
जी॥ तेने घरनी रीस्या स्वामी दीजेजी॥ अेवुं सांभ
ळी पेडीजो रायजी॥ हता पांडु पुत्र त्यां न्यायजी॥
५५॥ साथे योध्या लीधा अपारजी॥ कहे मारो अे
चोरने मारजी॥ घेर्या पांडव ने कहे नंनेजी॥ लेई
अकणाया धर्म त्यां मंनेजी॥ ५६॥ कहे धर्म तल्ने आ
ठामजी॥ आ छे अधर्मी लोकनुं गामजी॥ अेम क-
हीने थाल्य पांडु तनजी॥ थाय पाछण पुरना लनजी
॥ ५७॥ कोई पाछण पारीताण मारेजी॥ कोई धूणला दे
अ उीराठेजी॥ पण बोलता नथी अे धीरजी॥ ते ऐ
सोप्युं करीने शरीरजी॥ ५८॥ सर्व सहन करी वीर
लायजी॥ तेम तेम असुर पुंठण थायजी॥ वाप्यो
लीमने त्यारे क्रोधजी॥ पाछो करीओ ते पण माल
धजी॥ ५९॥ वारे अर्जुन लेरीने धर्मजी॥ नयक

रो करुं शंई कर्मने ॥ पण मान्युं नहीं कह्युं छे कने ॥ मावी असुर संहारया अनेक ने ॥ ज्ञारजा तीमेरा यने आवी आव्यो ने ॥ देई मारने मणिपमाड्यो ने ॥ अक सैन्याना नन संहार्या ने ॥ पणीपुरजन नेअक मार्या ने ॥ हस्तापुर उलट करी धिर चाल्यो ने ॥ नील आंधळ पासे आव्यो ने ॥ पेछी सर्वे थ याते यार ने ॥ नीकळ्या हीम नयाते वार ने ॥ २६ ॥ पण रहे तो कणी तेणमने ॥ मोटुं कणिपुर नेनुं गाम ने ॥ चाल्या पांडव नेणी पार ने ॥ थयो पुंळ कणिनी रधार ने ॥ ३० ॥ ॥ एवे आव्युं लया नकवन ने ॥ चाल्या पांडु तणा पांचे तन ने ॥ प डीनीरां थयुं अंधकार ने ॥ रणमां रपडे जे हुता कुमार ने ॥ उथा लेवरावीकणी जे आडी वार ने ॥ आवे थालतां गीरीना धार ने ॥ मोटां तरूवर त- न अथडाय ने ॥ तारे लयकारी रो थाय ने ॥ ३१ ॥ अति पीडाय प्रलुना संत ने ॥ नव नडे कोपुरनो पंथ ने ॥ वृध्या युधिष्टर वाणी अेम ने ॥ अरे वीर आपी रोईम ने ॥ ३३ ॥ ॥ वलण ॥ ॥ केम थारी वीरा माहरा ॥ केवी निपजरो पेर रे ॥ गोप्नर धन कहे आपणे ॥ लवुं करीने घेर रे ॥ ३४ ॥ ॥

इतिश्री माहात्मारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहि णीपर्वे पांडव वनप्रवेशो नाम त्रीविंशोऽध्यायः

२३॥ ॥अध्याय।।२४मो।। ॥

रागबिहाग।। ॥अरेरे आते हवे शुंथ-
शे, आव्या माहावनमांय।। तरुवर त्यार अढार
छे, सुजे पंथ न त्यांय।।अरेरे आते हवे शुंथशे।।
टेक।।१।।श्री हरी केमना सांभणे।।मारा हृदयना
पोकार।।रेन अंधारीमां रडवडे, पांचे पान्डुकुमार
।।अरेरे।।२।। माहावन लागे बिहामणुं।।त्राडे
वन तणा वाघ।। अग्नि झरे अवनी परे, न्लगंध
साय साग।।अरेरे।।३।। साथे सति मारी सुं-
दरी, तेनुं कोमळ अंग।। शोणितवहे छे शरीरथी
थाय काया त्नंग।।अरेरे।।४।। श्रम करीजे मा-
रग जोणवा, पण थईजे नीरारा।।अश्वणपाय
थी चालतां, थाय अजणा ऊदार।।अरेरे।।प
।।मुस्तके तरुवर आथडे, वागे कंटक पाय।। सिंहना
द सजणो करे, सुणीकंपे छे काय।। अरेरे।।६।।पणी
यर चढ अजगर बहु, काग कोयल मोर।। मणीधर
नोण शीयाळवां, करे त्नयत्नीत शोर।।अरेरे।।७
।।वारे वाले वितावणी, वागे ठेकर ठेस।।अंधारे
सती अअडाई पडे, भूज नियाय केरा।।अरेरे।।८
।।तरुवर ऊंच्या अवनी परे, घड मोटा गंजीरा।।जी-
णीजावण बहु जोरडी, बेर बावळ अंजीर।।अरे
रे।।६।। शीमळा सहडा ने पीपळा, कोय कांयडी थोर

॥आंजा आंजली अति अंजरा, सतावणनेरी
जोर॥अरेरे॥१०॥नेनी धाके घरा धुनर्त, पाये
सणकतो रोष॥ ते नर घनमां रडवडे, धरी लोगीनो
वेष॥अरेरे॥११॥ नणनी पुंठे कणि थयो, करवा स
त्यनुं ताल॥ ते कणी पांन्डु पुंठे थयो, करे महावने
राय॥अरेरे॥१२॥ नलराया धर्म धीरन तजी,
पुछे विरनेवात॥ शो करीशुं उद्यम अहीं, कणी मा
ऊमरात॥अरेरे॥१३॥ क्षुधा प्रगट थई पापणी
नथी चलातु चर्ण॥ मारग जोज्यो नव मळे,
अरे अरोरण रीर्ण॥अरेरे॥१४॥ आथडतां
अघनी पडे, घणी अठा थाय॥ फरे छे आभावनमां
साथे सती पणाय॥अरेरे॥१५॥ रजनी वीति
अेम दुःखथी, थयो अरुण उद्योत॥ तीमीर गयुं
अघनी थकी, दीठी दीनकर ज्योत॥अरेरे॥१६॥मा
रग आव्यो नदथिमां, चाल्या आशिरे छरी॥ स
ति संगाथे परवर्यां, सहु उत्तर दीश॥अरेरे॥१७
॥पीडे क्षुधा अति सर्वने, घणा आकळा थाय॥
नणक्षुप सोधवा कारणे, वीर आगण न्याय॥अरे
रे॥१८॥ दुःख देवाने कारणे, कीधुं कणि अेक काम॥
त्यां थकी लेअन अेकपर, रच्युं विराज गाम॥
अरेरे॥१९॥ आगजनाथ्यो कारमो, रच्यां द
ण क्ल अहार॥ सुंदीर सरोवर निपेतलसुं॥रोहे

र शोला अपार ॥ अरे रे॥२०॥ वाडीमां प्रसू
अपार छे, दाख दाडमीने केल॥ जंबु सीताफल जो
रडी, कणीए भेलव्यो भेल॥ अरे रे॥२१॥ कल्पवृ
क्ष आंबा घणा, रामफल ने अनार॥ अंजीर दा
म जांबली, शोलानो नही पार॥ अरे रे आंतो
॥२२॥ नालीयेर रायण करमदी, वारेक अंजुर
॥ पुष्पलतानां मांडवा, मेघाडंबरे नरपुर॥ अरे
रे॥२३॥ आव्या जे स्थानक चालता, पांचे पांडु
कुमार॥ द्रुपदतनया संग छे, शुद्ध सति अवतार
॥ अरे रे॥२४॥ आगल थी करीम्या घणुं, अनेकुं स
मीपे लहेर॥ निर्मल जल सरोवर भर्युं, तेमां ले
वीछे लेहेर॥ अरे रे॥२५॥ ॥वलण॥
॥ ॥लेहेर लगी तेमां सभी॥ शोला अ
पर मपार रे॥ गोवर्धन के विश्राम कर्या॥ अने
कुंताकुमार रे॥२६॥ ॥इति श्री माहात्म्य
रथे पांडवचरित्रे स्वर्ग रोहिणी पर्वे कणि कर
त्रीम शोहेर पांडव प्रवेशो नाम चतुर्विंशमो अ
ध्यायः॥२४॥ ॥अध्याय॥२५मो॥ ॥
राग आशावरी॥ ॥वैशंपायन वाणी ब
दालुं, सांभल कुरुराय॥ कणीए आगल ला
व्यो जेघो, त्यारपछी शुं थाय॥१॥ धर्म के सां
भलजे वीरा, क्षुधा लागी अपार॥ लजो आ

गमां कृष्ण कूल नाख्यो, कहीए आपण अहंकार
राखोए छे रसिक आगतणो वई, पुछो तेने धीरा दान-
म आपीने मेघा जायो, डोटे चक्रोदर धीरा डाघा
णी रतुणी चक्रोदर डोळ्या, गया आग मोझार आ
हीं तहीं लेयुं ते स्थानक, पछी कर्यो पोकार राजा कोए
छे रसिक आगतणो, तमो आपो मीठा मेघा ला
थी लेयुं अमारे कोगर, हाम तमारा देवा ताणा मृत्यु
तर नवपाम्यो त्यारे, चाल्यो कुंता तना आकृणे ओ
चरे ओणी लेयुं, पण नहीं मासघरमा उगा ते स्था
नक अेक तरुवरहीक, रोता अधिक अंकोरा श्रीकृष्ण
ना स्वरूपे मुख छे मोटुं, दीसे रातुं चोणा डा लावधयो
ते कृष्णनो तेने, लेवा मनक लाग्युं पण नथी रसिक को
तेनो, धीतड पाछु लाग्युं दा सोळ मोहोर सोना-
नी तेणे, मुकी वृक्षने ठारा रसिक हाले आगतणो ते,
लेले आ नीरधारा ला अेम कही अंतरमां पोते,
लीधां अरकृष्ण सारा हाथे महीं त्यांथी परवरी आे,
कुंतानो कुमार राठा कपीयुग रनकु रुपर कर्युं छे, रथ्यो
आग आदीशा लीमे कृष्णले तोड्यां तेनां, थयां क-
पटथी शीरी राषा कापेलां मुस्तक अनीजां ते कृष्णत-
णां नीरधारा ककरमां केरी क्युधा छे लमणे, पडे कृष्णनी
धार रीरे नथी अबर अे लोपा भीमने, कुंपरनुं
आयघना अेदलामां कपी पुरुष थईने, पकड्यो वायु

तन ॥ १३ ॥ पोकार कीधो पापी कणीए जे, को घाल्ले
आ हीरा ॥ कोई पुरुषे आवी कापयां, मुज बांधवनां
हीरा ॥ १४ ॥ आवो अधिपति पुर तणा, पापीने
शीक्षा करवा ॥ धाव धाव को रक्षा राणा, खूनीने सं
हरवा ॥ १५ ॥ पोकार सांभळी दोडी आव्या, पुरना
राय समेत ॥ मारो मारो कोई कहे छे, को कहे करो अ
पेत ॥ १६ ॥ वात सांभळी वीर तणी, गभराया कुंता
तन ॥ वडो वांक दीठो पोतानो, भणे थाशे हून ॥ १७
॥ अेटलामां अधिपतीए आवी, भीमने बंधन
कीधो ॥ मार मारवा लाग्या सरवे, पाछो पुरमां लीधो
॥ १८ ॥ ते वेळाए भीम सेनने, धारण न रह्युं धीर ॥
बूम पाडीने कहेवा लाग्यो, घाल्ले माहारा वीरा ॥ १९
॥ बूम सुणी बांधवनी ज्यारे, मनमां चमक्या राय
॥ तुरत उठ्या ते स्थानकथी, भीम समीपे गया
॥ देखा जावता पांचे जणने, तुरत बंधन कीधा
॥ भीम सेन संगाथे सौने राजद्वारे लीधा ॥ २० ॥
पुर मध्ये लईने त्यां राये, हुकम कर्यो नीरधार ॥ अ
छेट जणने गाम बाहार लई, मारी नाखो ठार ॥ २१
॥ अमल करी उघाडे त्यांथी, चाल्या जे चंडाळ ॥ सं
गाथे लीधा छेट जण जे, कुंताजी ना बाळ ॥ २२ ॥
गाम बाहार गया ते वेळा, थयुं सर्व जनो पोकारी हे
र्ष आग कांई नव दीठुं, मनमां पाम्या सोभ ॥ २३

।। अरे दैव आर्युं कोरीने, केम नडे आचार ।।२४।।
मरण मोहन छे तारी, केम न पामुं पार ।।२५।। सं-
लणावी कृती अग्रहभ्ये, पूर्व जणनी कथा ।। तेवुं कर्म प-
णकुं भोगवुं छुं, आवेणा सर्वथा ।।२६।। ते स्थानक-
थी आगण चाल्या, कुंताना कुमार ।। अरजुन
आव्या ते वेळा, महावननी मोझार ।।२७।। पुर-
आनो पकडीने पापी, कणीयुग भूंडण लय ।। पणी आ-
गण अेक कुपर कीधुं, सुणजो जनमेजय राया ।।२८।। स-
दाव्रत मांझुं सोहंतु, महावननी मांया ।। कुपे ज-
यों अेक नीरमण जणनो, पांडव आव्या त्यांया ।।
रला विप्रवेशथी कणीयुग बेठो, दीधां आदरमान ।।
रमो जमो रजनी रहो वासो, धर्म तणो मुकाम ।।३०।।
रह्या रात पांडव ते वनमां, सरवे सांयुं माण्युं ।। कणी
तणुं आ कुपट कारमुं, कुंता सुते ना जाण्युं ।।३१।।
करी रसोई ने जुगते जमीयां, आरीशा आदकी दीधी
।। नरपतीने नारी सरवे, नीरांते निंद्रा कीधी ।।३२।।
प्रातःकाळे जाग्या सरवे, जवा थीयां तैयार ।। अेरला-
मां त्यां कपटी कणीजे, कीधो प्रौढ पोकार ।।३३।। धाव
धाव आवेणा कोई, पोर करी जय धन ।। कणीयुगे उ-
त्पन करेला, दोडी आव्या जन ।।३४।। पकड्या आपी
पांडु तनने, देवा माझो मारा धर्म पासे नव ज-
युं कणीजे, सत्य तणा जयतार ।।३५।। युधीष्टर

ने मालम पडीयुं, नीश्चे कपटी ओह ॥ दुःख दे छे आ
पणने, मारे हवो कळीनो देह ॥ ६ ॥ कहे धर्म वको
दर भत्ये, पकडो ए नीरधार ॥ दुष्ट कळी ए नीश्चे
मारे, मारो तेने मार ॥ ७ ॥ सुणी वात मोरा जां
यचनी, तुरत कळीने काल्यो ॥ भीमसेनने री
स चडी ते, भेर करीने हणाव्यो ॥ ८ ॥ अनय करीने
अणी ओ हाव्यो, कळी ए कर्यो पोकार ॥ मुको मुजने
पांडु पुत्र, तमो धर्म तणा अवतार ॥ ९ ॥ हथि छोडी
ने कळी करगरे, मुको मने आ दीरा ॥ युधिष्टर ने करी वि
नती, पाय नमावे शीर ॥ १० ॥ अवगुण छे अनेक मु-
जमां, पण मोटो गुण एक ॥ माटे मुको मुजने स्वामी
कहुं ते गुण विवेक ॥ ११ ॥ ॥ वलण ॥ ॥
विवेक राखी मन विषे ॥ कहुं छुं गुण विस्तार रे ॥
गोवरधन कहे ते सुणी ॥ छोडी मुको महाराज रे ॥
१२ ॥ ॥ इति श्री महाभारथे पांडव चरित्रे
स्वर्गारोहिणी पर्वे पांडव प्रत्ये कळी कपट वर्णन ना
म पंच विंशो अध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ अध्याय
२६ मो ॥ ॥ राग माढ ॥ ॥ कहे वै-
शंपायन वचन ॥ तमो सांभळो परिक्षित तन ॥ क
ळी करगरतो अपार ॥ कहे मुको मने आ वार ॥
॥ कहे धर्म तुं सांभळ वात ॥ गुण अवगुण कहे सा
क्षात ॥ गुण होय जे तुज मां सार ॥ मुकुं जीवतो

कुंतीरंधारा ॥२१॥ पछी जो ज्यो कणी ते हीरा ॥ नाम्यु
धर्मराजने रीरीरा ॥ कुंछुं पर थेम अवगुण मारा
पछी गुण पहीरी कुंसारा ॥ ३ ॥ कहे विप्रना धर्म त-
जयुं ॥ छोडी संध्या सांतीउ कडयुं ॥ लेवरावुं जेटी
तुंयन ॥ करायुं त्रष्ट सरपेनां मन ॥ ४ ॥ विप्रनी थ-
नीया करी करे ॥ करी कपट परयन हरे ॥ वेद धर्मने मा-
ने न आपे ॥ ते युधिष्ठर माहारो प्रताप ॥ ५ ॥ क्ष-
त्री कायर पारी सर्व ॥ करे नींदा ने राखे गर्व ॥ कदे
नहीं गौ ब्राह्मणनी पहार ॥ लुंटे विप्रना जणीजन-
दार ॥ ६ ॥ वैश्य जो छुं तोणे तोल ॥ जोजे कपटथी
सहु बोल ॥ वणी ज्युं नामुं मांडे ॥ धन हरवाने क-
परी होडे ॥ ७ ॥ जेन जाणे लने देरो गाण ॥ जुठां
चडावे लनने आण ॥ रमे यिनता परथुं जन ॥ ८ ॥
मारे माता पीतानां आण ॥ टा ॥ छोडी पुन्य करेस-
हु पाप ॥ तेतो धर्म छे मारो प्रताप ॥ पुन्यवंतने
पणमां कुपाडुं ॥ करी कपट कई कढे माडुं ॥ ९ ॥ अपा
अवगुण मारा जनेक ॥ पण गुण छे मोटो एक ॥
बीजा युगमां करे तपर ॥ या ॥ जेरीपवन हमे लगी
काय ॥ १० ॥ रीत तापवृषा अकु सहेत ॥ पण प्रभु
हरीनि नव हेत ॥ जेम आयुष्य थिती लतो ॥ त्या-
रे मोस घणे काण पातो ॥ ११ ॥ मारा राज्यमां क्षण
मीज ने ह ॥ करे अटमास सेधा तेह ॥ जेक ध्रित्त

हरिपर राखे॥ मुखे रामनाम कुलसाखे॥ रा
थाय अरमासमां दरशन॥ जयवैकुंठमां तेज
ना॥ मरण जन्मनो फेरो जशे॥ कहि हरीचरणे
चीत्त धारे॥१४॥ जेवो स्वामी छे मारो धर्म॥
कह्यो तम आगळ सर्व मर्म॥ पछी धर्म कहे सुण
वात॥ कहुं वासकुं तारो साक्षात॥१५॥ ताहरे
हरिजन पासे न जवुं॥ धर्मकाममां आडुं न थावुं
॥ हरिकथा भजन ज्यां थाय॥ त्यां ताराथी नव रहे
वाय॥ रेपा पाप निंदा थाती होय ज्यांय॥ रहेजे वा
स करीने त्यांय॥ परस्त्रिशुं रमे कोई नर॥ वास
करवाने तुज अधिकार॥१६॥ कनक कामनी छूत
वेहेवार॥ वास करवाने तुज अधिकार॥ पछी क-
ळी चाल्यो करी प्रणाम॥ आव्या पांडव तजी ठा-
म॥१७॥ आव्या चार जोजन जेटले॥ ऋषी सप्त
दीठा तेटले॥ देख्या मुनीने हरख्या अपार॥ पां
डवे कीधो नमस्कार॥१८॥ करी प्रदक्षा पाये ला-
ग्या॥ मुख आशीष वचन जकु माग्या॥ कीधा
अर्जुने दंडप्रणाम॥ नम्या सहेदेव मुकी माम॥
१९॥ नम्या भीम नकुल ते सर्व॥ भुपति नम्यां
मुकीने गर्व॥ जेनी करुणा थई छे काया॥ घणा कष्ट
थी करे तपरीआय॥२०॥ मुस्तक ऊपर जटा जिरा
जे॥ पासे जण कुंकमंडण छाजे॥ डीठ्यो शीरपर

हरी निरधार॥ कीधा ऊधेधे राज अपार॥२१॥ हरी
हरी आपे मुख एह॥ कोटी कल्पनी चरण देह॥
एवा महा मुनी मनमां लाव्या॥ हरी दर्शन प्री-
ते ओलाव्या॥२२॥ मुनीए जां आंख ऊघाडी ज्यारे
॥ऊलां अरजण दीठा त्यारे॥ पूछे मुनी तमो को-
ण जन॥ आव्या शाथी आ अघोर वन॥२३॥
कारणे आ प्रयाण कीधो॥ केम राज त्यजी वेराग ली-
धो॥ क्यां लघु जनेक पुंछे गाम॥ तम पीता तणुं
शुं नाम॥२४॥ ॥चलण॥ ॥
नाम शुं पीता तणुं॥ कहोने साचुं पवनरे॥ गो-
वरधन केहे क्यां नथी॥ महा त्नयानक वनरे॥२५
॥ ॥इतिश्री माहात्नारथे पांडवचरित्रे
स्वर्गारोहणी पर्वे पांडवो सप्त ऋषी स्थल प्रवे-
शो नाम षट्विंशो अध्याय॥२६॥ ॥
अध्याय २७ मो॥ ॥राग आशावरी
॥ ॥वैशंपायन वाणी वदे तुं, सुण जन्मे-
जयराय जी॥ पांडवने सप्त ऋषी पुछे छे, त्यार पछी
शुं थाय जी॥१॥ पाय नमी ने पांडव बोल्या, सां-
भळो मुनी वात जी॥ हस्तीनापुरना पांडु राजा,
तेह अमारा तात जी॥२॥ कुंता मात हमारां
कहीजे॥ पुरण पांचे भ्रात जी॥ पांडव नाम प्र-
सिद्ध हमारु, त्रीलोकीमां छे ख्यात जी॥३॥ भीम पेंथे बे-

कुंडमां नईओ, कपी तणो नय आणीजा॥२॥
नपाट सकुत्यागकर्युं आ, तणवत् मुनीओ ज्ञा
णीजा॥२॥पांडव जेवुं नाम सांनळी, मुनी हर
रूप्या अपारजा॥पांचे पांडवने सौ मुनीओ, कीं
धा नमस्कारजा॥५॥ शौ ब्राह्मण प्रतिपाळ तमो
छो, नले पधार्याओ नाजा॥पवित्र कीधो आश्रम
मारो, दर्शन दई महाराजजा॥६॥ प्रसिध्य कीर्त्ति
जगत विषे छे, पांडु पुत्र तमारीजा॥धर्म तणा अव
तार तमे छो, वैकुंठना अधिकारीजा॥७॥आद्य
न्नारथ तम चरित्र केवुं, तेछे अमारी साथेजा॥
तेथी जाणीओ सर्व पराक्रम, शूर जणनी वा-
तजा॥८॥तम चरित्र पहेलुं जे थएलुं, ऋषीओ
आगळ नाख्युंजा॥तम चरित्रनी वात वर्णवी,
ते अमपासे राख्युंजा॥९॥नथी अजाण्यां कार्य
तमारां, सौ जो जाणे वातजा॥प्रसिध्य छो सौ
जक्त विषे, तम कीर्त्ति पूर्ण विख्यातजा॥१०॥सां
नळी अेवुं वद्या युधिष्टर, धन्य नाग्य अमारां
जा॥ सफ्ळ थयो आ जन्म अमारो, दर्शन करी त
मारांजा॥११॥पण कहो मुनी संदेह मनमां, क्या
रनुं तप आदरीउंजा॥क्यारथी आ स्थण वास
कर्यो ने, क्यारनुं तन आ धरीयुंजा॥१२॥हरीने
बोल्या मुनी धर्मराजुं, ठीक पुछ्यो प्रश्न आजजा॥

कहुं विस्तारी तमने वीरा, सुधरे सरवे काजजी ॥१३॥
त्रण कल्पथी देह धर्यो आ, सप्तऋषी नीरधारजी ॥
तपस्या आदरी छे तेदीननी, आ स्थळ वनमोझा
रजी ॥१४॥ वळी कहे धर्म सांभळो स्वामी, कल्प ते शुं
कहेवायजी ॥ केटला वर्षनो कल्प हशे ते, मनमां संदेह
थायजी ॥१५॥ कहे मुनी तमे सांभळो महिमा, कल्प
तणो कहुं तेहजी ॥ विस्तारी विगत संभळावुं, मनमां
राखो तेहजी ॥१६॥ मास जाय एक मनुष्यनो, त्यारे
पीत्रीनो दिन थायजी ॥ पीत्री तणुं एक वर्ष थाय त्या
रे, देवनो दीन कहेवायजी ॥१७॥ मुनी कहे सांभळजे
पांडव, चोकडीनो विस्तारजी ॥ सत्ययुग त्रेताने द्वाप
र, कळी ए युग छे चारजी ॥१८॥ लक्ष तेताळीश वी
श सहस्त्र, एटलां वर्ष ज्यारे जायजी ॥ चार युग वामे
ते वेळा, एक चोकडी थायजी ॥१९॥ एवी चोकडी इकोते
र, करे, इंद्र अमरपर राजजी ॥ चौद इंद्र एवी रीत मरे
त्यारे, विधि दीन एक उद्यातजी ॥२०॥ एवी रीते ब्र
ह्माना दिवसमां, चौद इंद्र बदलायजी ॥ रात्रीमां पण
चौद इंद्र जाय, दीनकर उद्योत थायजी ॥२१॥ ब्रह्माने
ज्यारे रात्री हवी त्यारे, सर्व जगत नाश पामेजी ॥
सूर्य चंद्र उडुगणने अग्नि, पर्वत पहाड विरामेजी ॥२
॥ ते वेळा प्रागवड ने पत्रे, आद्य निरंजन पहोडेजी ॥ छंद
वडे स्तुति मारकंड करता, जई प्रभुनी जोडेजी ॥२३॥

जे रीते ब्रह्मानो दिवस जेह, त्रण शत साठ विशे
षजी॥ वर्ष थाय ब्रह्मानुं त्यारे, सांभळो धर्म नरेश
जी॥ २४॥ एवां शत वर्ष ब्रह्मा जीवे, सो विधि जाइ
लायजी॥ त्यारे विष्णुनी पण कहेवी, जे रीते वर्ष
थायजी॥ २५॥ एवा सो वर्ष विष्णु जीवे, शत वि
ष्णु जाहलायजी॥ त्यारे श्री शंकरनी शाख, एक
घडी कहेवायजी॥ २६॥ एवी रीते वर्ष थाय छे शी
वनुं, दश सहस्त्र वर्ष जीवेजी॥ शक्ति तणी पण
थाय छे वीरा, सांभळजो सौ जेवेजी॥ २७॥ एवां
शत वर्ष शक्ति जीवे त्यारे, महाकल्प एक कहेवाय-
जी॥ एवा त्रण कल्प थया जमोने, कारण छे जा
णायजी॥ २८॥ एवा चौद कल्प थाशे त्यारे, मुनी
मार्कंड मरशेजी॥ मुनी मार्कंड एक अरी, लोमऋ
षीनुं रोम ओतरशेजी॥ २९॥ एवा ऋषी रोम सो था
य त्यारे, पींछ अगदालवनुं खरेजी॥ एवा अग
दालव सहस्त्र थाय त्यारे, मुनी भुशंडी मरेजी॥ ३०
॥ एवुं प्रमाण छे कल्प तणुं, तमो सांभळो पांडु
कुमारजी॥ प्रयाग भग वृत तप ओद्यापन, करीजे
अमो आधारजी॥ ३१॥ ॥ वलण॥ ॥
तप वृत करीजे आस्थणे॥ सेवा हरीनी सार
॥ गोवरधन कहे ऋषी वदे॥ एम सांभळे पांडुकुमा
र॥ ३२॥ ॥ इतिश्री महाभारथे पांडव

मरितेश्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे सप्तऋषी पांडव प्रत्युक्त
स्वर्गो नाम सप्तविंशोऽध्यायः॥२७॥ ॥

अध्याय॥२८ मो॥ ॥रागमारू॥ ॥

वैरीपाये कुरु वारताय॥ तुं तो सांभलने हरीराया॥
कीधुं कल्प तणुं त्यां प्रमाण॥ राजधर्मने ऋषी जे
जाणी॥ वणीधर्म त्यां करीया अपार॥ स्वामि
सकुण थयो अवतार॥ थया पवित्र श्रवणमार॥ सुं
णीशास्त्र कथा गुणधार॥१॥ पछी नमीया त्यां अ
टजणपाय॥ लई आज्ञाने आगळ जया॥ दीधीद
षीजे अडकीआरीशी॥ भणजे माधव तमने अ
दीशी॥२॥ चाली स्नेहनी आंखमां धार॥ कुंशी थि
या त्यां कुंता कुमार॥ आव्या पंदर जोजन तेह॥ म
हाभक्त प्रभुना अेह॥३॥ आव्युं शीतळितुं यनत्रे
ऊ सार॥ भर्युं सरोवर जळ अपार॥ पाणी उपर तरू
नी छाया॥ जेनी शोभा तणो नहीं पार॥४॥ आवी ते
स्थेण ऊभा रह्या॥ जळपीवा समीपे गया॥ अेटले
थई गर्जना घोर॥ सांभल्यो सरवे व्याघ्रनो सोर॥
५॥ जळपान करे छे जेटले॥ व्याघ्र गरजीने आव्यो
तेटले॥ मुख मोटुं भयंकर रूप॥ जेई व्याघ्रने यम
क्या भूप॥६॥ तव भीमने चडीयो क्रोध॥ लई आव्यो
जनावर जोघ॥ करी उंचे पछाड्यो ज्यारे॥ थियो व्या
घ्रनो गांधर्व त्यारे॥७॥ जेई विस्मय थया पांडु

तना॥ ज्यांथी व्याघ्रनो प्रगट्यो तन॥ पछी पुछी ते
वीरने वात॥ केम थई तुज गांधर्व तन॥८॥ पछी
बोल्यो गांधर्व तेडी हाथ॥ तमो सांभळो ने मुज
नाथ॥ करता हुं वारी॥ तप जेह धारा॥ व्याघ्र थई-
ने डराव्या ते वारा॥१०॥ पछी आप मुनी जे दीधो॥
मारो व्याघ्रनो देह ज कीधो॥ हालावालो कीधा में जई
॥ स्वामी चुक जे मारी थई॥११॥ व्याघ्र वेरी ज्यारे
आहलारी॥ मारी गती रीपेरे थारी॥ त्यारे दुर्वासि
बोल्या वचन॥ तुं तो सांभळ गांधर्व तन॥१२॥
पांडव हिमाळे जावशे ज्यारे॥ भीम पकडी पछा
डी त्यारे॥ ते वेळा थईश मानव तन॥ त्यां सुधी
रहे व्याघ्रनुं तन॥१३॥ आप लई आव्यो सरोवर
पासा॥ पाणी मनमां महा उदासा॥ जाणी कुःअवि
डाख्युं मारुं॥ थाशे कल्याण पांडव तमारुं॥१४॥
जेम कही गयो नीज आवासा॥ पूरी अमर इंद्रनी
पासा॥ कही इंद्रने सघळी जे वात॥ लय हिमपं
थे पांचे भ्राता॥१५॥ धर्म नीकुळ शहदेव साराव
णी अर्जुन तम कुमार॥ अंगे धर्यां छे वन कुल वस्त्र
॥ नथी हाथमां कोई ने अस्त्र॥१६॥ वेरी लोगीनो
अरवण पाय॥ साथे भूपति कोमण काय॥ सुणी
उठ्या इंद्र ततखेवा॥ लीधा संगमां कोटि कुदेवा॥
१७॥ पुष्पक वैमान लीधुं छे साथ॥ आव्यो पांडव

पासे अमरनाथ॥ पांडवे जोया ईंद्रने ज्यारे॥१७
ई पाये पड्या सर्व त्यारे॥१८॥ भणी परस्पर ऊ-
भा रह्या॥ वेश लेई ईंद्र गजराया॥ कहे पुत्र तुं पा
मे छे दुःख॥ चाल स्वर्गनुं आपु सुख॥१९॥ कहु स्व
राज्य पुरी अमरानुं॥ रुंछे काम हि माणे जवानुं॥
धर्म नीकुण संदेह सार॥ आपुं उत्तम कुं अधि
कार॥२०॥ माटे चालोने साथे मारी॥ थाशे पुरण
आश तमारी॥ तव बोलिया अर्जुन वात॥ तात
साम्हे लेईने हाथ॥२१॥ पीता शुं करुं राज्यने लेई
आप्या सुख सहु मुकी देई॥ जेह हरि तणुं छे काम
॥ जेवुं अमारे वैकुंठ धाम॥२२॥ तेनो नाश थाय केडो
वार॥ नथी करवाना ते अंगिकार॥ राज्य लोग ने
इच्छता नथी॥ तुच्छ सुख छे ए सर्वथी॥२३॥
माटे हरी शरणे अमो जईशुं॥ कोटी कल्प त्यां सुखी
या थाशुं॥ पछे ईन्द्र गयो आकाश॥ गया हि माणे
हरिना दास॥२४॥ ॥वळण॥ ॥चा-
ल्या हरिजन हेतथी॥ मुख जपता श्री राम रे॥ गोव
र्धन कहे अरले॥ आव्यो राक्षसकेरो ठाम रे॥२५॥
॥ ॥इतिश्री महाभारथे पांडवचरित्रे स्वर्गा
रोहिणी पर्वे गांधर्वश्राप निवारण ईंद्रपांडव संवा
दो नाम अष्टविंशो अध्यायः॥२८॥ ॥
अथ अध्याय॥२९मो॥ ॥राग आशावरी

॥ ॥ आव्या पांडव गाम तजी ते, अघोर घ-
न मोझार ॥ हिमाळानुं द्वार हतुं त्यां, रेहेता रा-
क्षस चार ॥१॥ ते राक्षसने जोईने, पांडवने उप-
न्यो त्रास ॥ जेटलामां ते राक्षस चारे ॥ आव्या पां-
डव पास ॥२॥ कहे दैत्य क्यम आव्या आ स्थळ ॥ क्यां
भयुं छे भारी ॥ कारणथी वेश धर्यो, त्यागीनो
ते कहो गाई ॥३॥ युधिष्ठिर वाणी एम बोल्या,
सांभळो दानव जन ॥ हिमाळे भयुं छे चिरा, तेथी
आव्या वन ॥४॥ दानव कहे सांभळ ने मानव, क-
रो युद्ध अम साथ ॥ जीती अमने जव हीमाळे,
नहितो वळो पश्चात ॥५॥ नही भया दैत्य जे कोभन्
ते ॥ जेवो अमारो टेक ॥ माटे करवो सत्य थकी, सं-
ग्राम राखी विवेक ॥६॥ भीमसेने हाकी युद्धनी
उड्या जंत्यो चिरा ॥ महा मल्ल मातंग सरिखा,
प्रौढ दीसे शरीर ॥७॥ भीमसेनने राक्षस सरवे
करे महासंग्राम ॥ सामा सामी गात्र पछाडे, मा-
हाबल मुके माम ॥८॥ जे रीते संग्राम थयो त्यां,
दारुण दिवस चार ॥ भीमसेने राक्षस सरवेनो,
कीधो त्यां संहार ॥९॥ थया धर्म प्रसुरी ते वेगा, क-
हे भीमने वात्ता ॥ तम विना आ संकटमांथी, को-
ण उगारे भ्रात ॥१०॥ एम कहीने आगण चाल्या
कुंताना कुमार ॥ आव्युं स्थानक पंचदेवनुं, गंगा

त्र॰ निरधारा ॥११॥ ते स्थानकमां आवीने सरवे, क
र्युं गंगामां स्नान ॥ पंचदेवनी पूजा करीने, संतोष्या
भगवान ॥१२॥ ते स्थानकथी हिमाळा पर, चढवा
लाग्या सर्व ॥ हरी समरण हरी भक्त करे छे, मुकी
मननो गर्व ॥१३॥ चढे गीरीने ऊंडे ऊतरे, विकट
मारग जेह ॥ वन अपार व्याघ्र वसे जकु वनमां, का
यर कंपे देह ॥१४॥ भाणे नीशा सम तीमीर रहे छे,
जेवां भयानक झाड ॥ रीछां झांकरा कंटक वागे,
प्रौढ भासता पहाड ॥१५॥ जे रीते जति दुःख वे
ठता, पांडव चाल्या भया ॥ त्रण भेजन पर गया जे
टले, राणी सतिनी काय ॥१६॥ द्रुपद तनया राणी
पड्यां भोई, थया ऊदास अपार ॥ करवा मांड्युं रूदन
सरवे, आंखे आंसुधार ॥१७॥ गदगद कंठ धर्म थया
त्यां, वाध्यो स्त्रिनो शोक ॥ अरे दैव आवुं थई रही,
मुकी धर्मे पोक ॥१८॥ अनजेला जे नारी बिचारी,
ताम दर्शन ना पामी ॥ भाग्यहीण अभणा जे
नारी, अधवचमां विरामी ॥१९॥ जे रीते जकु रूदन
करीयुं, शोके कीधुं स्नान ॥ चाल्या त्यांथी आगण सर
वे, ध्यान धरी भगवान ॥२०॥ भीमसेन तव कहे ध-
र्मने, कहोने वीरा वात ॥ शा कारणथी अधवचमां
जे, नारीनी थई घात ॥२१॥ युधिष्टर तव वाणी बो
ल्या, कहुं छुं वीरा जेह ॥ शा कारणथी सति भणी थई,

घातवारता जेहां॥२२॥ पांच्यपति जे पत्निके
रा, नहीं अन्य अविशेष॥ पण अर्जुन ऊपर ते
धरती, प्रीति नार विशेष॥२३॥ तेना दोष थकी जे
नारी, हरी दर्शन नव पामी॥ हीमाळानी अधव-
चमां ते, पाप थकी विरामी॥२४॥ ते स्थानकथी
वीरा भेलनपर, आव्या पांडु तन॥ ते स्थानकमां
निकुळ केरू, तुरत गळि गयुं तन॥२५॥ भेई विर
सो रुदन करता, अरे दैवशुं थयुं॥ त्रणेवारमां निकुळ
केरू, गात्र गळीरे गयुं॥२६॥ आंखे आंसु वहे स-
र्वने, प्रगट्यो शोक अपार॥ कहे सर्व कुंत्यांत अति-
शे, महावननी मोझार॥२७॥ करी स्नान ने आगळ
चाल्या, पुछ्युं भीमे ते वार॥ कहो भाई शा कारणथी
पड्या, निकुळ अहीं निरधार॥२८॥ धर्म कहे सांभ-
ळने विरा, कहुं छुं साची वात॥ कह्युं मानतो नहीं ते
मारूं, तेथी थई आ घात॥२९॥ एम कहीने आगळ
चाल्या, चतुर ते महावीर॥ पंदर भेजन आव्या
त्यारे, गळ्युं सहदेव शरीर॥३०॥ रुदन करता पांड
व सरवे, नाहीं थया तैयार॥ भीमसेने त्यां पुछ्युं
भाईना, मरण तणी नीरधार॥३१॥ धर्म कहे सांभ
ळने विरा, भेरी मोटा जेह॥ वात सकु आगळथी
जाणे, पण ना कहे संदेह॥३२॥ द्यूतरम्याने द्रुपति
हार्या, पण ते वात न कीधी॥ ते कारणथी सहदेव

ने रीझे जे ध्याया जही तजी दीधी ॥३३॥ एम करतां ह-
री नेनन आव्या, विपरीत थई छे वात ॥ अर्जुन गा-
त्र गणी पड्युं, गुणवंतानी थई घात ॥३४॥ महाक-
ष्यांत करे धर्म राजन, भीम रडे ते वारे ॥ मरण थयुं मुज
शूरा वीरनुं, तेथी दुःख रींझुं पधारे ॥३५॥ स्नान करीने
आगळ चाल्या, पुछी भीमे पेरा रा ॥ कारणथी अर्जु-
न पडीयो, शुं छे हरीने रोरा ॥३६॥ युधिष्टर तव वाणी
वद्या ए शूर वीर महा सुजाण ॥ कुरुक्षेत्र मांयोध्ध विदा-
र्या, मारी मोरां आण ॥३७॥ ते पापेथी अर्जुन पडी-
या, सांभळ वीरा वात ॥ एम करी पंथे नेनन आव्या
त्यां थई भीमनी घात ॥३८॥ गणी गयुं भीम गात्र
समुद्र, डोलत्यो सागर रोक्या ॥ अरे दैव कुं रह्यो जेक-
लो, पड्या दुःखना थोक ॥३९॥ ॥वलण॥ ॥
व्याप्युं दुःख अथाग विरल, रही जे कुली न्तरे ॥
शोचसु धन कुंदे मार्ग त्याग्ये, गुणवंतानी घात रे ॥४०
॥ ॥इति श्री महाभारते पांडवचरित्रे स्वर्गा-
रोहिणी पर्वे हीमाळे पांडव गळीत वर्णनो नाम अनु-
न्त्रिंशमो अध्याय ॥२९॥ ॥अध्याय ३०
मो ॥ ॥राग धनाश्री ॥ ॥वैशंपायन त्यां बो-
ल्या वचन जो ॥सांभळ परिक्षित रायना तनजो ॥ भी-
मसेन नुं गात्र त्यां गणी युं जो ॥ हवे धर्म रुदन बहु क-
री युं जो ॥१॥ करी स्नान चाल्या तेणी वार जो ॥ आव्युं

सरोवर शोभीतुं सारजी॥ घोर शुद्धातशुपर अपार
जी॥ नव नवानी जुग्या जगारजी॥ रातदवीमांसे
मनमां रायजी॥ केम करी वैकुंठमां न वायजी॥ नवलाग
सतो हिनकर ज्यांयजी॥ लागे रजनी सहाय छे त्यां-
यजी॥७॥ जेवो विकट हिमालो पहाडजी॥ मोटा गी
री तणा छे कराडजी॥ जेठा सरोवर पाणे रायजी॥
युधिष्टर अति मन अकुणायजी॥४॥ अरे प्रभुतुं कुं
क्यां थकी आवुंजी॥ करी दर्शन सुखीजो थावुंजी॥ कर
ता विहारी मनथी अपारजी॥ जेठा सरोवर त्रठ नीर
धारजी॥ पाथ युं अंतर लमीने लाणजी॥ प्रेर्या
नारद धर्म प्रमाणजी॥ आव्या नारदने धर्मरायजी॥
जोई पांडव मन हरखायजी॥७॥ कीधो पीताने डंप्र
णामजी॥ मळ्या नारदने तेह ठामजी॥ कहे धर्मराय
तुने धन्यजी॥ अरो युधिष्टर मुजतनजी॥७॥ तें तो
कीर्त्ति वधारी छे मारीजी॥ थया जवैकुंठना अधिकारी
जी॥ अेम कहीने थाजता थयाजी॥ लई वैकुंठ ऊतार
च्याजी॥८॥ सुख्या युधिष्टरने धर्म त्यांयजी॥ गया
चीलपूरीनी मांयजी॥ नारदपण गया नीलजवा
सेजी॥ युधिष्टर गया प्रभुनी पासेजी॥ ल्लारी जेथ
गदा पद्म धारजी॥ जेठा कोटी लुवन करतारजी॥
लई पाये नमाव्युं शीशजी॥ कीधां दर्शन श्री जगदी-
शजी॥९॥ कहे केशव रायने धन्यजी॥ अरो धर्मत

णो तुं तनजी ॥ मोटा मुनी जेह छे त्यां मजी ॥ नथी
कुष्ट को वैकुंठ मांयजी ॥४॥ जेवा भक्तने नमीया पा
यजी ॥ करी स्तुति ने रीझव्या रायजी ॥ शोभा वैकुंठ-
नी छे अपारजी ॥ स्फाटिक मणिना स्थंभ विराज-
जी ॥५॥ भींत कनक सरीखी कीधीजी ॥ हारे चिंता
मणी जडी दीधीजी ॥ जेथी शोभा कही न वलायजी ॥
एवी हरख्या युधिष्टर रायजी ॥६॥ पछी पांडव आव्या
स्वामी पासजी ॥ कहे श्रीपतिने ते प्रकारजी ॥ स्वामी
जेह छे अरज अमारीजी ॥ कहुं आज्ञा ने होय तमा
रीजी ॥७॥ पछी बोल्या त्यां शामशरीरजी ॥ कहो
सुजे युधिष्टर विरजी ॥ कहे धर्म सुणो महाराजजी ॥
मुने देखाडो कौरवराजजी ॥८॥ विर वडो छे दुर्योधन
जी ॥ माटे करवां छे तेनां दरशनजी ॥ गामे तेथा जे
छे मुज भाईजी ॥ नथी वेगणी जेशुं सगाईजी ॥९
॥ माटे लेवा छे तेमने आजजी ॥ करी कृपा देखाडो मह-
राजजी ॥ मुज विर चार जमेनारजी ॥ ते दरशावो मु
ने भुगदाधारजी ॥१०॥ आव्यो हरीजे त्यां रायनो
हाथजी ॥ आव्या रायरणछोड संगाथजी ॥ जेह वैकुं
ठमां विर चारजी ॥ देखाड्यां साथे द्रुपति नारजी ॥११
॥ सुख सागरमां नित्य नायजी ॥ एवी हरख्यां यु-
धीष्टर रायजी ॥ त्यांथी चाल्या हरी नीरधारजी ॥ ग
या जमपुरनी मोझारजी ॥१२॥ देखाड्या रीत कौरवने

त्यांयजी ॥ पज्या नर्क कुंडनी मांयजी ॥ लोगवे दुःख अपरम पारजी ॥ करे कष्ट तणा ते पोकारजी ॥ २० ॥ धी ॥ कौरवे धर्मने न्यारेजी ॥ कहेवा लाग्यो दुर्योधन त्यारेजी ॥ आप कृपा करी कहीजे तमनेजी ॥ नर्क दुःखथी छोडावो हमनेजी ॥ २१ ॥ करे कल्पांत सर्वे भ्रातजी ॥ सांभळो धर्म अमारी वातजी ॥ आवी द्यायुधीष्टरने मनजी ॥ कह्युं कृपा करी भगवनजी ॥ २२ ॥ कीधो हरी अे दुःख नीवारजी ॥ काढ्या कौरव सर्वने बहारजी ॥ नेवा घटे तेवा नीरधारजी ॥ आप्या रीत भ्रातने अवतारजी ॥ २३ ॥ ॥ वलण ॥ ॥ आप्या अवतार धृतराष्टर तनने ॥ सुणजो श्रोता जनरे ॥ धर्म हरी शरणे रह्या ॥ कहे छे गोवरधनरे ॥ २४ ॥ ॥ इति श्री महाभारथे पांडवचरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे वैकुंठे धर्म प्रवेशो कौरवदुःख नीवारण नाम त्रीशमो अध्यायः ॥ ३० ॥

॥ अध्याय ॥ ३१ मो ॥

॥ राग आशावरी ॥ ॥ अवतार आप्यो कौरवने त्यां, मृत्युलोक मोझार ॥ युधिष्टरने भ्रात च्यार, रह्या वैकुंठमां नीरधार ॥ १ ॥ सति द्रुपति साथे छे, कंई नथी कोईने दुःख ॥ भक्ति करे प्रभुधरनी पोते, सदा लोगवे सुख ॥ २ ॥ वैकुंठनां सुख लोगवतां, बहु दिन वही गया त्यारे ॥ सुभद्रा कुंता

ने जोत्रा, वैकुंठे आव्यां त्यारे ॥३॥ परीक्षितने ध्या
ण डस्यो, ते पण हरी शरणे जय ॥ पीता मातने
देखीने, त्यां नम्या परिक्षत राया ॥४॥ हवे हस्ति-
ना पुरमां, राज जन्मेजय महाराज ॥ धर्म शास्त्र
प्रमाणे पोते, सुखे चलावे राज ॥५॥ अहार ब्रह्म
हत्या जो थई छे, जन्मेजयने माथी ॥ शरीर सघणुं
शाम थयुं छे, दुःख सहे सहु वाते ॥६॥ वैशंपाय
रूषीने तेडी, कह्यो सर्व प्रकार ॥ ब्रह्महत्या जो जा
गी मुजने, वात कहो विस्तार ॥७॥ वैशंपायक हे सु
ण राजन, हराउ पर्वनी वात ॥ सांभळजे तम पू
र्वज केरी, टळे दोष साक्षात ॥८॥ वैशंपाये कहे भा
रता, सुणे जन्मेजय राया ॥ टळ्यो दोष सहु देहथ
की, कंचन सरखी थई काय ॥९॥ जे हत्या रे हे-
ती हती ते, लागच्यार त्यां कीधा ॥ च्यार जणने थ
तुर लागते, मुनीजे वहेंची दीधा ॥१०॥ जे रीते
हत्या जो टाळी, कथा सांभळी कर्ण ॥ शाम हतुं श
रीर थयुं ते, कंचन सरखुं वर्ण ॥११॥ करी तपस्या ज-
न्मे जय ते, गया स्वर्ग मोजार ॥ नारद जोण आव्या
तेना, वृध्ध पितानी रधार ॥१२॥ युधिष्टर कहे जन्मे
जय कहो, प्रभ्नतणो वृतांत ॥ सुणी दुःखी के सत्य
असत्य कही, लागो मननी भ्रांत ॥१३॥ जन्मेज
य तव पाय नमीने, पद्याधर्मनी साथी ॥ प्रभ्न पि-

तार्थई दुष्ट आपणी, शुं कहुं तेनी वात ॥१९॥ अ
सत्य अन्याय थयो अतिशे, मनमां बांध्यो गर्व ॥
हत्यावेरथी धन संघरता, लुहुं वदे छे सर्व ॥२०॥ पा
म लेच्छ आवी वस्या पुरमां, धर्म उठाड्यो ता॰
॥ प्योरी भरी वधी रोहेरमां, भाठां कृण महाराजां
॥२१॥ सुणी मन उदासी थया, माहा धर्म सांभळी
वात ॥ कह्युं हतुं श्रीकृष्णे मुजने, कळी आव्यो सा
क्षात ॥२२॥ वैकुंठमां हरी भक्ति करता, पांडु कुळ
नी रघवार ॥ पुन्यवंता पांडव छे सर्वे, शीवजीनो अ
वतार ॥२३॥ सत्यवादी पांडवनी प्रित्ये, कथा सांभ
ळे जेह ॥ ब्रह्म हत्यादिक पातिक भरो, मोक्ष पाम
शे तेह ॥२४॥ श्री दामोदर त्रुठे तेने, थाय सइणस
हुकाज ॥ माहा भारथनो महिमा एवो, सहाय
थशे महाराज ॥२५॥ व्याधी रोग मटे तेनाथी,
निरमळ थाये तन ॥ वंध्या नारी पुत्र पामशे, नि
रधन पामे धन ॥२६॥ स्वर्गारोहिणी सुणे सने
हथी, पापी पावन थाय ॥ मनइच्छीत फळ मागयां
मळशे, एवो छे महिमाय ॥२७॥ हरीकथा पर हेत
राखीने, पुन्यदान बहु करवुं ॥ निंद्या नव करवी को
जननी, ध्यान हरीनुं धरवुं ॥२८॥ पांडु पुत्रनां प्रौ
ढ पराक्रम, वर्णव्यां तेमां चरित्र ॥ वैशंपायेन ज
मेजयने, कीधुं परम पवित्र ॥२९॥ जे संस्कृत

કૃપા સમજીને, સાર વલોવી લીધું ॥ ગૂજરાતી
ભાષામાં આણી, મેં કડવાં બંધ કીધું ॥ ૨૪ ॥ મા
ટે આપણ ખોડ હોય તો, કરજો મુજને ક્ષમાય ॥
સર્વ કવિનો કિંકર છું, પુજું પ્રેમે પાય ॥ ૨૫ ॥ ગુણ
ભર્યા ગૂજરાતની મધ્યે, ભરૂંચ મુજ ઠામ ॥ રૂપ
ડવંજ ને ડાકોર વચ્ચે, છે આ નાનું ગામ ॥ ૨૬ ॥
ગોવરધન છે નામ માહરૂં, ત્રવાડી મેવાડ જ્ઞાત ॥
ભટ્ટ અટક પ્રખ્યાત માહરી, સદારામ મુજ તાત ॥
૨૭ ॥ ગ્રંથ રચ્યામાં ચૂક હોય તો, કરજો કવિજન મા
ફ ॥ અલ્પ બુધ્ધિથી રચ્યો ગ્રંથ આ, નાનકડો જ
સરાફ ॥ ૨૮ ॥ વ્યાકરણનો કું ભેદ ન સમજું, ન જા
ણું પિંગળ પાઠ ॥ નથી શીખ્યો ગ્રંથ ગુરૂજે, કા-
વ્ય તણા કાંઈ ઠાઠ ॥ ૨૯ ॥ તે માટે વિનતી ક-
રી કહું છું, ગોવરધન તમ દાસ ॥ સાર લેઈ શ્રી
કાર કરો આ, પુસ્તક રાખી પાસ ॥ ૩૦ ॥ સોમ
નાથ શંકર છે મોટા, ઈષ્ટદેવ મુજ એહ ॥ વળી
આરાસો અધિનારીનો, સર્વે સમર્પ્યો દેહ ॥ ૩૧
॥ રામક્ષેત્રમાં સ્નાન કર્યાથી, નિર્મળ થાયે ગા
ત્ર ॥ વ્યાધી રોગ મટે તેનાથી, રામ પ્રસાદી પાત્ર
॥ ૩૨ ॥ શ્રી રઘુવીરને ચરણે નામું, કરૂં વિનતિ ક
રજોડ ॥ ગોવરધન કહે બોલો સર્વે, જયજય શ્રી ર-
ણછોડ ॥ ૩૩ ॥ ॥ વલણ ॥ ॥

श्री रणछोड वदो सहु मुखथी ॥ बोलो राम एक वार रे ॥ गोवरधन कहे सीतापति ॥ आत्माना आधार रे ॥ ३४ ॥ ॥ इति श्री माहाभारथे पांडव चरित्रे स्वर्गारोहिणी पर्वे ग्रंथ समाप्त वर्णो नाम एक त्रिंशमो अध्यायः ॥ ३१ ॥ छ छ छ छ

समाप्त